Web Portal
www.ghatatighatana.com
G.G. News
सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के लिए एक प्रकाशन...
RNI REG.NO.-CHHHIN/2004/15050
डाक पंजीयन क्रमांक- 013/रायगढ़/2020-2022

घटती घटना

अम्बिकापुर, वर्ष 19,अंक -106 बुधवार,15 फरवरी 2023, पृष्ठ -8 मूल्य 2 रूपये

ज्ञान की बातें

प्रत्येक मनुष्य का भाग्य एक बार अवश्य उदय होता है। यह बात अलग है कि वह उसका कितना लाभ उठाता है।
-भृगु संहिता-

आयकर विभाग की तलाशी पर बीबीसी ने दी पहली प्रतिक्रिया

बीबीसी दुनिया का सबसे बकवास और भ्रष्ट कॉरपोरेशन

नई दिल्ली,14फरवरी 2023(ए)। बीबीसी के दफ्तरों पर आयकर विभाग (आईटी) के तलाशी के मुद्दे पर भाजपा कांग्रेस और बीबीसी पर हमलावर है। भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने मंगलवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि कांग्रेस को ये याद रखना चाहिए कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बीबीसी पर प्रतिबंध लगाया था। बीबीसी का प्रोपेगेंडा और कांग्रेस का एजेंडा साथ-साथ चलते हैं।

गौरव भाटिया ने कहा कि बीबीसी दुनिया का सबसे बकवास और भ्रष्ट कॉरपोरेशन है। बीबीसी पर उन्होंने निशाना साधते हुए कहा कि कुछ वर्ग विश्व पटल पर भारत के बढ़ते कद को पचा नहीं पा रहे हैं। पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत नई ऊंचाइयों को छू रहा है और कुछ तबकों को यह रास नहीं आ रहा है। बीबीसी को भारत में पत्रकारिता करने का पूरा अधिकार है, लेकिन उन्हें देश के कानून का पालन करना होगा।

आईटी अब पिंजरे का तोता नहीं

गौरव भाटिया ने कहा कि आयकर विभाग ने कानून के तहत ही बीबीसी के दफ्तर पर तलाशी ली है। आईटी विभाग अब पिंजरे का तोता नहीं है, जैसा सुप्रीम कोर्ट ने कांग्रेस शासन के दौरान सरकारी संस्थानों के बारे में कहा था।

राष्ट्र विरोधी ताकतों के साथ क्यों खड़े हो?

उन्होंने कहा कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों से मेरा सवाल है कि जब तलाशी किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुंची है तो वह किस आधार पर राष्ट्र-विरोधी ताकतों के साथ खड़े हैं? वे रिपोर्ट आने तक धैर्य के साथ इंतजार क्यों नहीं कर सकते? क्यों कांग्रेस हमेशा चीन, बीबीसी और यहां तक कि आतंकवादियों के साथ खड़ी रहती है?

बीबीसी की प्रतिक्रिया

उधर,आईटी की कार्रवाई पर बीबीसी ने प्रतिक्रिया दी है। बीबीसी ने कहा कि वह भारत के आयकर अधिकारियों के साथ पूरा सहयोग कर रहा है। बीबीसी ने ट्वीट कर कहा कि हमें उम्मीद है कि स्थिति का जल्द समाधान हो जाएगा।

अघोषित आपातकालःकांग्रेस

इससे पहले कांग्रेस ने आईटी की कार्रवाई को अघोषित आपातकाल कहा। कांग्रेस ने कहा कि पहले बीबीसी की डॉक्युमेंट्री आई, उसे बैन किया गया। अब बीबीसी पर आईटी का छापा पड़ गया है। ये अघोषित आपातकाल है।

विवादों में बीबीसी की डॉक्युमेंट्री

बीबीसी की विवादित डॉक्युमेंट्री को लेकर हाल ही में काफी बवाल हुआ था। बीबीसी की डॉक्युमेंट्री 2002 में गुजरात दंगों पर बनाई गई थी। केंद्र सरकार द्वारा इस डॉक्युमेंट्री की स्क्रीनिंग पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। देश की कई यूनिवर्सिटियों में इसकी स्क्रीनिंग के लिए बवाल भी हुआ था।

संक्षिप्त समाचार

श्रद्धा की तरह एक और लड़की की हत्या

नई दिल्ली ,14 फरवरी 2023(ए)। यहां मित्राऊं गांव से श्रद्धा हत्याकांड जैसा मामला सामने आया है। यहां एक युवक ने प्रेमिका की हत्या करने के बाद उसकी लाश ढाबे के फ्रिज में छिपा दी। आरोपी का नाम साहिल गहलोत है और इसी गांव का ही रहने वाला है। प्राथमिक जानकारी के अनुसार, आरोपी युवक की शादी किसी और लड़की से तय हो चुकी थी।

प्रेमिका युवक की शादी में बाधा डाल रही थी। वह नहीं चाहती थी कि साहिल की शादी कहीं और हो। इस बात को लेकर साहिल ने प्रेमिका को बुलाया और उसकी हत्या कर दी। हत्या के बाद लड़की की लाश ढाबे के फ्रिज में छिपाकर फरार हो गया। उल्लेखनी है कि श्रद्धा हत्याकांड के आरोपी आफताब ने भी श्रद्धा का शव फ्रिज में ही छुपाया था। श्रद्धा हत्याकांड में पुलिस को जांच के दौरान पता चला था कि आफताब ने श्रद्धा की हत्या करने के बाद शव को ठिकाने लगाने के लिए शव के कई टुकड़े किए थे।

कांग्रेस एमएलए कृष्णा पुनिया के खिलाफ एसएचओ सुसाइड मामले में सीबीआई कोर्ट ने वारंट जारी किया

राजगढ़,14 फरवरी 2023(ए)। कांग्रेस एमएलए कृष्णा पुनिया की परेशानी बढ़ सकती है। 2020 के स्टेशन हाउस ऑफिसर सुसाइड मामले में राजस्थान की स्पेशल सीबीआई कोर्ट ने पूनिया के खिलाफ अरेस्ट वारंट जारी किया है। रिपोर्ट के मुताबिक कृष्णा पूनिया पर बीकानेर संभाग के राजगढ़ (चूरू) थाने के तत्कालीन प्रभारी विष्णुदत्त बिश्नोई को आत्महत्या के लिए उकसाने का आरोप है।

फांसी से लटके मिले एसएचओ

बता दें कि कृष्णा पूनिया तीन बार की ओलंपियन, देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म श्री और खेल के क्षेत्र में दिए जाने वाले अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किए जा चुके हैं। केंद्रीय जांच ब्यूरो की एक अदालत ने मंगलवार को कांग्रेस विधायक और पूर्व ओलंपियन कृष्णा पूनिया के खिलाफ एक पुलिस अधिकारी की आत्महत्या के मामले में वारंट जारी किया। मई 2020 में एसएचओ को अपने सरकारी आवास पर फांसी पर लटका पाया गया था।

मृतक एसएचआ का व्हाट्सऐप चैट सनसनीखेज!

रिपोर्ट्स के मुताबिक चूरू के पुलिस अधीक्षक को संबोधित एक सुसाइड नोट में, एसएचओ ने कहा था कि वह ÷अपने चारों ओर बनाए गए दबाव को सहन करने में सक्षम नहीं÷ थे। एसएचओ और उनके कार्यकर्ता मित्र के बीच एक व्हाट्सएप चैट का स्क्रीनशॉट वायरल हुआ था जिसमें पुलिस अधिकारी ने दावा किया था कि वह ÷स्थानीय स्तर पर गंदी राजनीति में फंस गया था।÷

सीएम गहलोत के पूर्व ओएसडी से भी हुई पूछताछ

मामले की जांच सीबीआई द्वारा की जा रही है। इस मामले में पूनिया के अलावा राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के पूर्व ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी (ओएसडी) से भी केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) के अधिकारियों ने पूछताछ की थी।

डीजेबी में 20 करोड़ रुपये के गबन में 3 गिरफ्तार : एसीबी

नई दिल्ली ,14 फरवरी 2023(ए)। दिल्ली सरकार की भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (एसीबी) ने दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) के 20 करोड़ रुपये के गबन के मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों की पहचान ऑरम ई-पेमेंट के मालिक राजेंद्रन कीझेदथ नायर, ऑरम ई-पेमेंट के सीएफओ गोपी कुमार केडिया और ऑरम ई-पेमेंट के अतिरिक्त निदेशक अभिलाष वासुकुट्टन पिल्लई के रूप में हुई है।

एसीबी के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, यह कदम सतर्कता विभाग, डीजेबी द्वारा की गई जांच के बाद आया, जिसमें 20 करोड़ रुपये के धन के गबन का खुलासा हुआ। संयुक्त पुलिस आयुक्त (एसीबी) मधुर वर्मा ने कहा, डीजेबी ने अपने उपभोक्ताओं को बिल भुगतान में सुविधा प्रदान करने के लिए कॉर्पोरेशन बैंक (अब यूनियन बैंक ऑफ इंडिया) को अपने कार्यालयों में विभिन्न स्थानों पर ऑटोमोटिव बिल भुगतान संग्रह मशीन स्थापित करने का काम सौंपा था।

संयुक्त सीपी ने कहा, बैंक ने इस अनुबंध को फ्रेश पे आईटी सॉल्यूशंस को दे दिया, जिसने इसे ऑरम ई-पेमेंट्स को दे दिया। अनुबंध 10 अक्टूबर, 2019 तक था, हालांकि ऑरम ई-पेमेंट्स ने मार्च 2020 तक राशि एकत्र की।

केंद्रीय मंत्री को जान से मारने की साजिश

महाशिवरात्रि पर हमले की थी तैयारी; एक गिरफ्तार

नई दिल्ली ,14 फरवरी 2023(ए)। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय को हत्या की धमकी देने के मामले में पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार कर लिया है। खबर है कि आरोपी ने नित्यानंद राय को महाशिवरात्रि पर गोली मारने की धमकी दी थी। केंद्रीय मंत्री शिवरात्रि के मौके पर हाजीपुर में निकलने वाली शिव बारात में शरीक होने वाले हैं। उन्हें जूलुस में जान से मारने की धमकी देते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया।

केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय पर हमले की साजिश नाकाम हुई है। बिहार की वैशाली पुलिस ने हाजीपुर से एक युवक को गिरफ्तार किया है। खबर है कि आरोपी ने नित्यानंद राय को महाशिवरात्रि पर गोली मारने की धमकी दी थी। केंद्रीय मंत्री शिवरात्रि के मौके पर हाजीपुर में निकलने वाली शिव बारात में शरीक होने वाले हैं। उन्हें जूलुस में जान से मारने की धमकी देते हुए वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया।

नगर थानाध्यक्ष के मुताबिक उन्हें व्हाट्सएप पर एक वीडियो मिला था। इसमें एक शख्स केंद्रीय गृह राज्य मंत्री पर अभद्र टिप्पणी करके उनपर आक्रामक हमला करने की बात कर रहा था।

इसके बाद एसपी के निर्देश पर एक पुलिस टीम का गठन किया गया और युवक की पहचान करके उसे सोमवार रात उसे पकड़ लिया गया। धमकी देने वाले शख्स की पहचान गोरौल निवासी माधव झा के रूप में हुई है। वह अभी हाजीपुर के हथसारगंज में रहता है। इस संबंध में विस्तृत जांच की जा रही है। नित्यानंद राय समस्तीपुर जिले के उजियारपुर से लोकसभा सांसद हैं। उनका गृह क्षेत्र हाजीपुर है।

सोशल मीडिया पर वायरल हुए युवक के वीडियो में वह शराब के नशे में नजर आ रहा है। वह अपने दोस्तों को कह रहा है कि क्यों न हम नित्यानंद राय की सुपारी ले लें। तीन साल से उसे महाशिवरात्रि पर सपना आ रहा है कि हम नित्यानंद राय को मार दिए। वो बैल पर जा रहे हैं और हम गोली दाग दिए।

टाटा एयर इंडिया की मेगा डील को मंजूरी

एयरबस से 250 विमान खरीदने का फैसला, पीएम मोदी ने कहा- ऐतिहासिक घटना

नई दिल्ली ,14 फरवरी 2023(ए)। टाटा समूह दुनिया के सबसे बड़े विमानन सौदे में एयरबस से 250 विमान खरीदेगा। टाटा संस के अध्यक्ष एन चंद्रशेखरन ने मंगलवार को कहा कि एयर इंडिया, एयरबस से 40 बड़े आकार के विमानों सहित 250 विमान हासिल करेगी।

टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन 40 वाइड-बॉडी ए350 प्लेन और 210 नैरो-बॉडी एयरक्राफ्ट खरीदेगी। वाइड-बॉडी एयरक्राफ्ट का इस्तेमाल अधिक लंबी दूरी की हवाई यात्राओं के लिए किया जाएगा।

टाटा समूह की मेगा डील

एक कार्यक्रम में विमान के अधिग्रहण के लिए टाटा ने एयरबस के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों भी इस वर्चुअल कार्यक्रम का हिस्सा थे। टाटा समूह ने पिछले साल जनवरी में एयर इंडिया का अधिग्रहण किया था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रतन टाटा, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉ और अन्य नेताओं के साथ एक वीडियो कॉन्फ्रेंस में एयरबस के मुख्य कार्यकारी गुइलौमे फाउरी ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक क्षण है।

पीएम मोदी और इमैनुएल मैक्रॉ भी थे मौजूद

इस वर्चुअल कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने भाग लिया। पीएम मोदी ने इसे एक ऐतिहासिक घटना कहा और कहा कि यह न केवल भारत और फ्रांस के गहरे संबंधों को दर्शाता है, बल्कि भारत के विमानन क्षेत्र की सफलता को भी दर्शाता है।

उन्होंने निवेशकों से उड्डयन उद्योग में भारत द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों का लाभ उठाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि %भारत एमआरओ (रखरखाव, मरम्मत और संचालन) का केंद्र बन सकता है। आज, सभी वैश्विक विमानन कंपनियां भारत में मौजूद हैं, इसलिए मैं सभी से इस अवसर का लाभ उठाने का अनुरोध करता हूं।

वर्चुअल कॉन्फ्रेंस के दौरान नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, दिग्गज उद्योगपति रतन टाटा और अन्य नेताओं ने भी इस डील पर अपने विचार व्यक्त किए।

सर्वश्रेष्ठ एयरलाइन बनने का सपना

एयर इंडिया अपने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय विमान नेटवर्क को मजबूती देने के लिए विमानों के मजबूत बेड़े की तलाश कर रही थी। एयरलाइन के विनिवेश के तुरंत बाद सीईओ कैम्पबेल ने अपने भाषण में घोषणा की थी कि एयरलाइन जल्द ही एक डील करने वाली है। इस साल 27 जनवरी को अपनी पहली वर्षगांठ के अवसर पर, एयर इंडिया ने कहा कि एयरलाइन अगले पांच वर्षों में खुद को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ एयरलाइन के रूप में स्थापित कर लेगी।

अमेजन और फ्लिपकार्ट की बढ़ी मुश्किलें

नई दिल्ली ,14 फरवरी 2023(ए)। ऑनलाइन शापिंग प्लेटफार्म अमेजन और फ्लिपकार्ट को सरकार ने नोटिस भेजा है। दरअसल ये नोटिस ड्रग कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया की ओर से भेजा गया है। डीसीजीआई वी.जी. सोमानी ने आठ फरवरी को जारी कारण बताओ नोटिस में 12 दिसंबर, 2018 को दिल्ली उच्च न्यायालय के एक आदेश का हवाला दिया। यह बिना लाइसेंस के दवाओं की ऑनलाइन बिक्री पर रोक लगाता है।

नोटिस के अनुसार, डीसीजीआई ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को आवश्यक कार्रवाई और अनुपालन के लिए मई और नवंबर, 2019 में आदेश भेजा था। तीन फरवरी को एक बार फिर यह आदेश जारी किया गया। ऑनलाइन दवा विक्रेताओं को नोटिस में कहा गया है, ÷आदेश के बावजूद यह कंपनियां बिना लाइसेंस के इस तरह की गतिविधियों में संलिप्त पाई गईं।÷

नोटिस में कहा गया है, ÷आपको इस नोटिस के जारी होने की तारीख से दो दिनों के अंदर कारण बताने के लिए कहा जाता है कि 'ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट 1940' के प्रावधानों और बनाए गए नियमों के उल्लंघन में दवाओं की बिक्री, स्टॉक, प्रदर्शन या वितरण की पेशकश के लिए आपके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए।÷

इसमें कहा गया है कि किसी भी दवा की बिक्री या स्टॉक या प्रदर्शन या बिक्री या वितरण की पेशकश के लिए संबंधित राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरण से लाइसेंस की आवश्यकता होती है और लाइसेंस धारकों द्वारा लाइसेंस की शर्तों का अनुपालन करना आवश्यक होता है। डीसीजीआई ने कहा है कि जवाब नहीं देने की स्थिति में यह माना जाएगा कि कंपनियों के पास इस मामले में कोई जवाब नहीं है और फिर बिना किसी नोटिस के उनके खिलाफ आवश्यक कार्रवाई शुरू की जाएगी।

पीड़िता से शादी करने के बाद कर्नाटक हाई कोर्ट ने पॉक्सो,रेप के आरोप को हटाया

हैदराबाद,14 फरवरी 2023(ए)। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने पीड़िता और आरोपी के विवाह के बाद यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण अधिनियम और भारतीय दंड संहिता के तहत बलात्कार के आरोपों का सामना कर रहे एक व्यक्ति के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही रद्द कर दी है। पीड़िता ने बालिग होने के बाद उससे शादी की थी और मामला लंबित रहने के दौरान दंपति का एक बच्चा भी था।न्यायमूर्ति के नटराजन की अध्यक्षता वाली पीठ ने मंड्या के एक निवासी द्वारा उसके खिलाफ आईपीसी की धाराओं के तहत क्क्ष्टस्ह्र और बलात्कार के आरोपों को रद्द करने की याचिका पर विचार करते हुए सोमवार को फैसला सुनाया।

खंडपीठ ने कहा कि इस संबंध में फैसला बच्चे और मां के हित को देखते हुए किया गया है।

पीठ ने टिप्पणी की कि पीड़िता अब वयस्क हो गई है और स्वतंत्र निर्णय लेने और जीवन साथी चुनने में सक्षम है। उसने आरोपी से शादी कर ली थी और बिना शादी के उसका एक बेटा भी है। पीठ ने कहा कि वह आरोपी व्यक्ति के खिलाफ मामला खत्म करने पर भी सहमत हो गई है।

अदालत ने कहा कि पीड़िता, बच्चे और उनके भविष्य के हितों को ध्यान में रखते हुए आरोपी के खिलाफ क्क्ष्टस्ह्र मामले को रद्द करना उचित है।

आईएएफ ने वाणिज्यिक उड़ानों के लिए 119 से अधिक मार्गों को मंजूरी दी

नई दिल्ली ,14 फरवरी 2023(ए)। भारतीय वायु सेना ने वाणिज्यिक उड़ान संचालन के लिए 119 सशर्त हवाई मार्ग जारी किए हैं, जो विमानन टरबाइन ईंधन की खपत और यात्रा के समय को कम करेगा और कार्बन उत्सर्जन में कटौती करेगा। नागरिक उपयोग के लिए हवाई क्षेत्र की उपलब्धता से एयरलाइनों के लिए प्रति वर्ष 1,000 करोड़ रुपये की संभावित बचत होगी। इस फैसले के बारे में जानकारी देते हुए केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री जी किशन रेड्डी ने कहा कि इस मामले पर वर्षों से बहस चल रही थी, लेकिन अनिर्णय के कारण नागरिक उड़ानों को भटकना पड़ा। ÷इस मुद्दे पर सरकार में विभिन्न स्तरों पर चर्चा की गई थी। भारतीय वायुसेना, जो हवाई क्षेत्र को नियंत्रित करती है, ने आत्मानबीर भारत पहल के तहत नागरिक उपयोग के लिए ऊपरी हवाई क्षेत्र को छोड़ने पर सहमति व्यक्त की है और लगभग 119 सशर्त मार्गों को मंजूरी दी गई है, मंत्री ने कहा।

एक सशर्त मार्ग (सीडीआर) एक मार्ग या एक भाग है, जिसे केवल कुछ निर्दिष्ट शर्तों के तहत नियोजित या उपयोग किया जा सकता है। अब तक लगभग 40 प्रतिशत हवाई क्षेत्र असैनिक उपयोग के लिए अनुपलब्ध था, जिससे एयरलाइनों को घुमावदार मार्ग अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिससे परिहार्य अतिरिक्त व्यय के साथ-साथ ईंधन और समय का अकुशल उपयोग हुआ।

रेड्डी ने कहा, ÷आईएएफ 30 प्रतिशत राष्ट्रीय हवाई क्षेत्र को नियंत्रित करता है, जिसमें से 30 प्रतिशत को हवाई क्षेत्र (एफयूए) के लचीले उपयोग के तहत ऊपरी हवाई क्षेत्र के रूप में जारी किया गया है।÷ ह्व एक हवाई क्षेत्र प्रबंधन अवधारणा है जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि हवाई क्षेत्र को विशुद्ध रूप से नागरिक या सैन्य के रूप में नामित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि एक निरंतरता के रूप में जिसमें सभी उपयोगकर्ता आवश्यकताओं को समायोजित किया जाता है।

उन्होंने क्षेत्रीय संपर्क योजना (आरसीएस) उड़ान के तहत जोड़ा, सरकार ने अब तक गैर-लाभकारी मार्गों पर चलने वाली एयरलाइनों के नुकसान की भरपाई के लिए व्यवहार्यता अंतर वित्त पोषण के रूप में 2,360 करोड़ रुपये खर्च किए हैं।

रेड्डी ने कहा, ÷2026 तक छोटे शहरों को जोड़ने के लिए 1,000 रूट शुरू करने का लक्ष्य है।÷

अब लंबी वेटिंग लिस्ट से मिलेगी राहत

नई दिल्ली ,14 फरवरी 2023(ए)। ट्रेनों में वेटिंग लिस्ट से छुटकारा पाने के लिए भारतीय रेलवे ने नया स्कीम निकाला है। त्यौहारी सीजन में ट्रेनों में सफर करना चुनौती से कम नहीं होता है। फिलहाल 8 मार्च को होली का त्यौहार है। त्यौहारी सीजन में बाहर से लोग आते हैं। इस कारण से ट्रेनों में भीड़ की स्थिति निर्मित होती है। वहीं एआई संचालित कार्यक्रम ने पहली बार 200 से अधिक ट्रेनों में खाली बर्थ इस तरह से आवंटित की है कि कम लोगों को बिना कन्फर्म टिकट के वापस लौटना पड़ा। परिणामस्वरूप इन ट्रेनों की वेटिंग लिस्ट में कमी देखी गई है।

यह परियोजना पिछले दो वर्षों से काम पर है,

जिसमें एआई को पिछले कुछ वर्षों के टिकट बुकिंग डेटा और रुझानों को सिखाया गया है, जिससे सही टिकट कॉम्बिनेशन बन जाए और वेटिंग लिस्ट कम रहे।

रेलवे के इन-हाउस सॉफ्टवेयर आर्म सेंटर फॉर रेलवे इंफॉर्मेशन सिस्टम्स द्वारा अक मॉड्यूल बनाया गया है और इसे आइडियल ट्रेन प्रोफाइल कहा जाता है। इस तरह की जानकारी दी गई थी कि कैसे लाखों यात्रियों ने इन ट्रेनों में टिकट बुक किए, कौन से मूल-गंतव्य जोड़े हिट थे और जो वर्ष के किस समय फ्लॉप रहे, यात्रा के किस हिस्से के लिए कौन सी सीटें खाली रहीं आदि।

बच्चे के हाथ में फटा बम

गुमला ,14 फरवरी 2023(ए)। गुमला जिला अंतर्गत चैनपुर प्रखंड के लुपुंगपाठ गांव निवासी 12 वर्षीय आदित्य असुर के हाथ में बम फटने से बायें हाथ की चार उंगलियां उड़ गयीं. पुलिस ने छात्र को गुमला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के बाद छात्र की स्थिति ठीक है. हाथ में बम फटने के बाद चेहरा व पैर में भी चोट लगी है. छात्र के अनुसार सुतली बम से घटना घटी है, जबकि पुलिस आलू बम बता रही है. आदित्य के पिता विनय असुर ने बताया कि वह मजदूरी करता है, जबकि उसकी पत्नी सहिया है. सूचना मिलते ही चैनपुर थाना प्रभारी ने आदित्य के इलाज का प्रबंध किया और आर्थिक मदद भी की. आदित्य गांव के ही स्कूल में चौथी कक्षा का

संपादकीय

विक्टिम कार्ड का सहारा

उचित यह होता कि नरेंद्र मोदी राष्टपति के अभिभाषण पर हुई बहस का जवाब देते समय उठाए गए सवालों के तथ्यपरक जवाब देश के सामने रखते। लेकिन उन्होंने अडानी का नाम तक नहीं लिया।

लोकसभा में राहुल गांधी सहित कई विपक्षी नेताओं ने प्रधानमंत्री और सरकार से अडानी प्रकरण में खास प्रश्न पूछे थे। उचित यह होता कि नरेंद्र मोदी राष्टपति के अभिभाषण पर हुई बहस का जवाब देते समय उन सवालों के तथ्यपरक जवाब देश के सामने रखते। लेकिन उन्होंने अडानी का नाम तक नहीं लिया। इसके विपरीत उन्होंने कहा कि उन्हें 'गाली' दी गई और सदन में 'झूठ' बोला गया। इसके साथ ही उन्होंने कांग्रेस के पतन पर लंबा वक्तव्य दिया और विपक्ष की 'निराशाओं' का जिक्र किया। और दावा किया कि उनकी ताकत अखबारी सुर्खियों या टीवी चर्चाओं से नहीं, बल्कि देश के लिए समर्पण से बनी है। सरकारी कल्याण योजनाओं को उन्होंने खुद से जोड़ा और कहा कि उनसे लाभान्वित लोग विपक्ष के आरोपों पर भरोसा नहीं करेंगे। सदन में प्रधानमंत्री बोलते, इसके पहले ही स्पीकर ने एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए राहुल गांधी के भाषण के कुल 18 हिस्से कार्यवाही से हटा दिए। इनमें वो हिस्से भी शामिल हैं, जिनमें गांधी ने मोदी और अडानी के रिश्तों पर सवाल उठाए थे।

राहुल गांधी ने अडानी और मोदी की एक पुरानी तस्वीर सदन में दिखाई थी, जिसे भी रिकॉर्ड से हटा दिया गया है। उधर राज्यसभा में एक और सिद्धांत प्रतिपादित किया गया। इसमें कहा गया कि सदन में प्रधानमंत्री की आलोचना नहीं हो सकती, क्योंकि प्रधानमंत्री एक संस्था हैं। अब देश के विवेकशील लोगों के सामने यह विचारणीय प्रश्न है कि क्या जिस व्यवस्था में हम जी रहे हैं, उसे किस ढंग का लोकतंत्र कहा जाए? लोकतंत्र का आम सिद्धांत जवाबदेही है। सवाल पूछे गए हैं, तो जवाब देना सरकार का काम है। इसी तरह प्रधानमंत्री सबसे ऊपर हैं, यह धारणा सिरे से अस्वीकार्य है। बल्कि ब्रिटिश व्यवस्था में (जिसे हमने अपनाया है) प्रधानमंत्री को कैबिनेट में समान दर्जे वाले पदधारियों के बीच प्रथम होने की मान्यता ही रही है। इसी आधार पर कैबिनेट के सामूहिक दायित्व का सिद्धांत प्रचलन में रहा है। लेकिन वर्तमान सरकार के तहत तमाम नए सिद्धांत और परिपाटियां गढ़ी जा रही हैं। इस परिघटना पर गंभीर चर्चा की जरूरत है। वरना, भारतीय लोकतंत्र के स्वरूप को उस हद तक बदल दिया जाएगा, जिससे इसे पहचान पाना ही कठिन हो जाएगा।

जाति जनगणना : तार्किक और समसामयिक भी

बिहार में जातिगत सर्वे की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। वैसे समूचे देश में इस कवायद की मांग कुछ राजनीतिक दल कर रहे हैं।

बिहार ने इस दिशा में पहल कर दी है, जिसे लेकर पक्ष-विपक्ष में राजनीतिक प्रतिक्रियाओं का रण चरम पर है। बिहार में जातिगत सर्वेक्षण को दो चरणों में पूरा किया जाएगा। पहले चरण में हर एक घर और घर में रहने वाले सदस्यों की उपस्थिति दर्ज होगी; और दूसरे चरण में 26 सवालों के माध्यम से हरेक व्यक्ति के सामाजिक-आर्थिक आंकड़े अंकित किए जाएंगे।

इसमें जाति, धर्म, व्यवसाय के साथ निवासियों से जुड़ी अन्य जानकारी भी सूचीबद्ध की जाएंगी। पांच लाख से अधिक कर्मचारियों के सहयोग से यह कार्य मई महीने के अंत तक पूर्ण करने की लक्ष्य निर्धारित किया गया है। ज्ञात हो कि केंद्र सरकार द्वारा मनाही के बाद राज्य सरकार ने अपने खर्च पर जातिगत सर्वे कराने का निर्णय लिया था जिसमें लगभग पांच सौ करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। राज्य के सभी दल इस निर्णय में शामिल थे और इसके पक्ष में विधानमंडल दो-दो बार सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर केंद्र को भेज चुका था। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा है कि राज्य की जनसंख्या की सामाजिक-आर्थिक जानकारी शीघ्र ही उपलब्ध होंगी और ये आंकड़े केंद्र सरकार को भी भेजे जाएंगे। उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने इसे ऐतिहासिक कदम बताते हुए इसे लगातार रोकने के लिए भाजपा को गरीब-दलित विरोधी बताया।

वहीं नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने इसे करदाताओं के पैसे की बर्बादी बताया और कहा कि इससे जातियों के बीच तनाव पैदा होंगे। कई मीडिया चैनल इसे मंडल-कमंडल के चश्मे से भी देखने की कोशिश कर रहे हैं, और इसके राजनैतिक इस्तेमाल पर चर्चा करने-कराने में व्यस्त हैं। आम तौर पर जानकारी और आंकड़ों से वही डरता है, जो भ्रम में जीना चाहता है। सांच को आंच क्या? गांव या पंचायत स्तर पर हर कोई अपने पड़ोसी की जाति की जानकारी रखता है। जातिगत जानकारी भर से से टकराव की स्थिति बन जाए, यह बात समझ से परे है। तथ्य है कि जिस गांव में एक ही जाति के लोग हैं, वहां कोई

टकराव नहीं होता। जाति की जानकारी होने मात्र से सामाजिक संबंध और भाईचारा बिगड़ जाए, ऐसा कोई समाजशास्त्रीय दावा नहीं करता।

सनद रहे कि बिना जाति के भारतीय समाज या यूं कहें कि सनातन समाज की बनावट को समझना नामुमकिन है। दरअसल, जातिगत संरचना गैर-बराबरी पर आधारित है, और यही अन्याय का व्याकरण भी है। वर्ण व्यवस्था में संप्रभु वर्ग है, जिसने सदियों से सत्ता, सम्मान और संसाधनों पर वर्चस्व बनाकर रखा था। फलस्वरूप समाज का बहुसंख्यक हिस्सा अमानवीय शोषण का शिकार रहा है। पहली जातीय जनगणना 1931 के अनुसार हिंदू समाज का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा शोषित रहा। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी इन शोषित समूहों ने वर्ण व्यवस्था के खिलाफ आवाज बुलंद की थी। संविधान सभा में भी इस पर खुल कर बहस हुई थी और इसे दूर तथा दुरुस्त करने के उपचार भी इंगित किए गए। यही कारण है कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को आरक्षण के माध्यम से मुख्यधारा में लाने के लिए क्रमशः 15 फीसदी और 7.5 फीसदी आरक्षण देने की व्यवस्था की गई। स्वतंत्रता के बाद से ही इनकी गिनती भी पहली भारतीय जनगणना से ही होती रही है। संविधान निर्माताओं ने समाज के एक अन्य बहुसंख्यक हिस्से को भी सामाजिक और शैक्षणिक तौर पर पिछड़े वर्ग के रूप में चिन्हित किया था जिन्हें मुख्यधारा में लाना सरकार की भावी जिम्मेदारी थी।

केंद्र सरकार ने 1953 में काका कालेलकर की अध्यक्षता में प्रथम पिछड़ा आयोग का गठन भी किया जिसकी रिपोर्ट 1955 में संसद के पटल पर रखी गई। लेकिन राष्ट-निर्माण के रास्ते में बाधा का हवाला देकर उस रिपोर्ट को लागू नहीं किया गया। दो दशक पश्चात जनता पार्टी की सरकार ने 1978 में बीपी मंडल की अध्यक्षता में दूसरे पिछड़ा आयोग गठित किया। मंडल आयोग ने 1980 में ही पिछड़ों को मुख्यधारा में लाने के लिए 40 सूत्री अनुशंसापत्र सरकार को सौंप दिया था। इससे पूर्व बिहार सरकार ने 1970 में मुंगेरी लाल आयोग का गठन किया जिसने 1977 में सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपी थी। इस रिपोर्ट को कर्पूरी ठाकुर ने लागू किया था।

इन तीनों आयोगों ने अपनी-अपनी रिपोर्ट में जातिगत आंकड़ों की आवश्यकता का जिक्र किया। वर्तमान आंकड़े होते तो रिपोर्ट को तर्कसंगत और वैज्ञानिक बनाने में सहायक होते। विकासवादी दृष्टिकोण से विचार किया जाए तो 1931 की जातीय जनगणना की जगह पर सरकार वर्तमान आंकड़ों के आधार पर नीतिगत योजनाएं बनाए तो उसके यकीनन परिणाम बेहतर हो सकते हैं। साथ ही, समाज के समावेशी विकास का पथ भी अधिक प्रशस्त होगा। इसलिए जातिगत जनगणना की मांग या कवायद ज्यादा तार्किक और समसामयिक प्रतीत होती है।

नवल किशोर

तुर्की और सीरिया में भूकंप

भारत का ऑपरेशन दोस्त,विराट मानवतावादी विदेश नीति

6 फरवरी 23 को तुर्की और सीरिया में 7.8 रिएक्टर का भूकंप आया था। जिससे तुर्कीए मैं भयानक त्रासदी का सामना करना पड़ा अब तक 30हजार से ज्यादा लोगों की मौतों की खबर है। इसी तरह सीरिया में भी भूकंप से भारी जानमाल का नुकसान आंका गया है। भारत ने तुर्कीए में तुरंत मेडिकल तथा अन्य सैनिकों की सहायता के लिए तुर्की में तीन जहाजों का बेड़ा रवाना किया था, इसी तरह सीरिया में भी भारत ने मदद का हाथ बढ़ाया है। उल्लेखनीय है कि तुर्की भारत का सीधा शत्रु नहीं रहा है पर मित्र देश भी कभी नहीं रहा उसने हमेशा उसने पाकिस्तान का साथ दिया है। जम्मू कश्मीर के मामले में पूरे वैश्विक स्तर पर भारत का खुलकर विरोध किया था।इसी तरह यूएनओ में तुर्किस्तान ने भारत का विरोध कर पाकिस्तान की तरफ से पैरवी भी की थी। जम्मू कश्मीर में भी आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए तुर्की ने पाकिस्तान का खुलकर साथ दिया था और भारत का सदैव घोर विरोध करता आया है। इस तरह भारत का घोर विरोधी पाकिस्तान के मित्र होने का तुर्की ने हमेशा प्रमाण दिए हैं पर तुर्की के परंपरागत मित्र पाकिस्तान से पहले भारत में माननीय संवेदनाओं को प्रथम स्थान देते हुए वहां पर आए भूकंप में वहां के नागरिकों के लिए सहायता भेजी है। वहां पर मेडिकल टीम ने अपने विशेषज्ञों के जरिए एवं डिजास्टर मैनेजमेंट की टीम ने 6 माह की बच्ची को मलबे से निकालकर एक अभूतपूर्व कार्य किया है, इसी तरह एक बुजुर्ग महिला को भी भारत की महिला डॉक्टरों ने बचाकर एक मिसाल प्रदान की है, भारत अब तक तुर्की में सात जहाज का बेड़ा सहायता हेतु भेज चुका है तुर्की सरकार ने भारत की संवेदनात्मक पहल का स्वागत करते हुए खुलकर प्रशंसा की है। भारत की सहायता से पाकिस्तान को सबसे ज्यादा चिंता सता रही है की तुर्की अब भारत का मित्र ना बन जाए और वह अपने समर्थक साथी तुर्की को कहीं खो ना दें। इसी क्रम में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने आनन-फानन में तुर्की में जाने का फैसला भी किया था जिसे पाकिस्तान मीडिया तथा तुर्की प्रशासन ने विरोध कर उनकी यात्रा को रोक दिया है, पाकिस्तान प्रधानमंत्री की इस यात्रा ने उन्हें बड़ा हंसी का पात्र बना दिया है। ऐसा नहीं है कि तूर्कीए में पहली बार भूकंप आया है इसके पहले 1997 में भी बड़ा भूकंप आया था जिसमें लगभग 25000 लोगों की मौत हुई थी, और तब भी भारत में मदद की थी थी उसके बावजूद तुर्क सरकार ने लगातार भारत का जम्मू कश्मीर तथा संयुक्त राष्ट संघ में भारत का खुलकर विरोध करके पाकिस्तान के मित्र होने का प्रमाण दिया था। पर भारत की तुर्की तथा सीरिया में सबसे पहले खुलकर मदद देने की कोशिश को पूरी दुनिया के देशों ने खुलकर तारीफ की है और मानवता की इस भारतीय पहलू को बहुत सराहना प्राप्त हुई है। इसके बाद तुर्कीए तथा सीरिया में पूरे विश्व के देशों में सहायता का सिलसिला जारी किया पर भारत में सबसे पहले पहल कर इस बात को स्पष्ट तौर पर इंगित कर दिया है की मदद के मामले में भारत विश्व का सिरमौर देश है और वह बिना मित्रता एवं शत्रुता के माननीय पहलू को ध्यान में रखकर सदैव मदद करता आया है। इसके पहले करोना संक्रमण में भी भारत ने पाकिस्तान सहित 60 देशों को वैक्सीन तथा बिस्तर भेजने की सहायता को अंजाम दिया था जिसे पूरे विश्व में प्रशंसा कर स्वागत किया था। इस मानवीय सहायता के साथ तुर्की और सीरिया में भारत की मदद के रूप में भारत को वैश्विक स्तर पर एक मददगार और शांति स्थापना वाले राष्ट के रूप में स्थापित करने में नई कूटनीतिक सफलता भी प्राप्त हुई है। अब तक तुर्की में 7 बड़े सहायता के जहाज भेज चुका है और पाकिस्तान अभी भी हाथ में हाथ धरे बैठा हुआ है। मानवतावादी दृष्टिकोण तथा सहायता से तुर्कीए की भारत के प्रति अवधारणा तो बदलेगी ही साथ ही पाकिस्तान का काला चेहरा भी उसके सामने साफ हो जाएगा। पाकिस्तानी मीडिया ने शरीफ की तुर्कि की यात्रा की काफी भर्त्सना कर चुका है और शहबाज शरीफ को तुर्किस्तान जाने का रास्ता भी बंद कर चुका है। तुर्किस्तान के प्रशासन ने शहवाज शरीफ को वहां आने के औचित्य पर प्रश्न भी उठाया था। पाकिस्तान की चिंता है कि भारत कहीं इस सहायता के चलते तुर्क का मित्र ना हो जाए और पाकिस्तान एक अपने जुझारू साथी को खो ना दें। उल्लेखनीय है कि 1947 में भारत तथा पाकिस्तान एक साथ आजाद हुए थे और जिन्ना के पाकिस्तान ने धर्म पर आधारित राज्य की स्थापना कर आतंकवाद को बहुत ज्यादा महत्व देखकर एक विध्वंसक देश की स्थापना की थी जबकि भारत विश्व शांति को लेकर विकास की डगर पर आगे बढ़ा था आज भारत वैश्विक स्तर पर सामाजिक, आर्थिक तथा सामरिक शक्ति बन चुका है और पाकिस्तान में भूखमरी के हालात पैदा हो गए। पाकिस्तान के पास प्रशासन चलाने के लिए पैसा नहीं है और आम जनता गेहूं चावल आटे शक्कर पेट्रोल डीजल के लिए त्राहि-त्राहि कर रही है वहां भूखमरी के हालात पैदा हो गए हैं। पाकिस्तान हर तरफ उधारी के लिए गुहार लगा रहा है ऐसी स्थिति में पाकिस्तान के पास जब खुद खाने के लिए पैसे नहीं है तो वह क्या तुर्की की मदद कर पाएगा ।तुर्की को यह बात समझ में आ जानी चाहिए कि पाकिस्तान किसी का स्थाई मित्र नहीं हो सकता वह केवल आतंकवाद का पोषक ही है। विश्व के सभी देशों को पाकिस्तान का आतंकवादी चेहरा समझ में आ चुका है अब तुर्की को ही समझना बाकी है।

संजीव ठाकुर,
चौबे कालोनी रायपुर छत्तीसगढ़,

प्यार हमेशा करता रहूंगा

मैं पास रहूं चाहे दूर तुमसे,
तुम पर ही सदा मरता रहूंगा।
तुम चाहो या ना चाहो मुझे,
प्यार हमेशा करता रहूंगा।।
देख लेता हूं चित्र जी भर के,
पलकों को बंद कर आंखों से।
याद आती हो हर पल प्रेयसी,
आंसू बहते हैं मन झरोखों से।।
बीते हुए लम्हों की अच्छी बातें,
वो वक्त गुजर गया छल करके।
तेरे मिलने का इंतजार किया हूं,
काया में प्रीत की शक्ति भरके।।
जप रहा हूं तेरे नाम की माला,
बना दी हो विरह का प्रेम साधु।
मन मंदिर की हो मुग्धा नायिका,
जहर जुदाई के लगता है मधु।।
अब कैसे जिऊं तुम्हारे बिना ?
मर जाऊं क्या मुझे तू ही बता?
विकल हो अंतर्मन में घुटता हूं,
प्यार करने की मिली है सजा।।

अशोक कुमार यादव
मुंगेली,
छत्तीसगढ़

कुछ प्रेम

कुछ प्रेम उत्सव नहीं मना पाते
वो उपवासरत रहते हैं ।
शबरी की तरह ,
राम के आने का।
प्रतीक्षा का उपवास करते हैं
उम्रभर किसी अपने के लिए
और जीवित रहते हैं बस
दो बूँद जल की लिये
चातक की तरह।
वो प्यासे रह जाते हैं
उम्रभर प्यार के लिए ।
अधूरे.अकेले.खामोश.क्योंकि
कुछ प्रेम उत्सव नहीं मना पाते हैं
वो इंतजार में रहते हैं
सदियों से....सदियों के लिए....

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

गारिमा राकेश गौतम गर्विता
कोटा,
राजस्थान

मै भी इंसान हूँ मुझे भी प्यार चाहिए

मै भी इंसान हूँ मुझे भी प्यार चाहिए
खुली जमीं व खुला आसमान चाहिए
कभी तो मुझे अपनी पहचान चाहिए
मै भी हूँ इंसान मुझे भी प्यार चाहिए
बंधनों में बंध के नही रहना है मुझे
चाहे जितनी तकलीफ दे देना मुझे
मुझे भी अपनी ऊँची उड़ान चाहिए
मै भी हूँ इंसान मुझे भी प्यार चाहिए
ये घर ये धन दौलत सब कुछ बेकार
अगर जीवन में नही किसी का प्यार
सीने में तम्मनाओं का उफान चाहिए
मै भी हूँ इंसान मुझे भी प्यार चाहिए
यूं अपनों का सताना अच्छा नही होता
बेवजह कभी रुलाना अच्छा नही होता
सबको अपने हिस्से का मुकाम चाहिए
मै भी हूँ इंसान मुझे भी प्यार चाहिए
क्यूँ कर तूने मुझे इसे कदर सताया है
शायद मैंने ही ज्यादा उम्मीद लगाया है
उम्मीदों पर भी लगाना लगाम चाहिए
मै भी हूँ इंसान मुझे भी प्यार चाहिए

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

प्रमेशदीप मानिकपुरी
धमतरी
छत्तीसगढ़

ड्रीम बजट से मतदाताओं को साधेंगे गहलोत

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने चुनावी साल में अपना ड्रीम बजट विधानसभा में पेश कर दिया है। गहलोत सरकार के इस कार्यकाल का यह अंतिम बजट है। इसी वर्ष के अंत में राजस्थान विधानसभा के चुनाव होने हैं। ऐसे में बजट का लोक लुभावना होना स्वाभाविक ही है। अपने बजट में गहलोत ने बजट को लोक लुभावना बनाने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी है। मतदाताओं को लुभाने के लिए गहलोत ने जहां बजट में राहतों का पिटारा खोला है वही आमजन के लिए कई नई योजनाओं की घोषणा भी की है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का पूरा प्रयास है कि राजस्थान में हर बार सरकार बदलने के मिथक को तोड़ा जाए। इसी को ध्यान में रखकर गहलोत ने प्रदेश के आम मतदाताओं को बजट के माध्यम से लुभाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। बजट आने से पहले ही मुख्यमंत्री गहलोत ने घोषणा की थी कि उनका इस बार के बजट का पूरा फोकस युवा व महिलाओं पर होगा। जो बजट में देखने को मिल रहा है। बजट में गहलोत ने समाज के किसी भी तबके को राहत देने से वंचित नहीं रखा है।

मुख्यमंत्री के रूप में अशोक गहलोत तीसरी बार अपने 15 साल का कार्यकाल पूरा करने जा रहे हैं। वहीं वित्त मंत्री के रूप में उन्होंने दसवीं बार राजस्थान का बजट पेश किया है। इस बार मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने लगातार 3 घंटे 20 मिनट तक बजट भाषण देकर प्रदेश में सबसे लंबा भाषण देने का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। इस बजट में उन्होंने राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारियों को पुरानी पेंशन योजना में शामिल करने की घोषणा कर कर्मचारियों को एक बड़ा तोहफा दिया है।

पिछली बार के बजट में पुरानी पेंशन योजना की घोषणा की गई थी। मगर उसमें राज्य सरकार के विभिन्न बोर्डों, निगमों, आयोग, विश्वविधालयों सहित अन्य संस्थानों में कार्यरत करीबन एक लाख सरकारी कर्मचारी वंचित रह गए थे। उन सभी को भी इस बार पुरानी पेंशन योजना में शामिल करने से राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी पुरानी पेंशन योजना के दायरे में आ गए हैं। कर्मचारियों की लंबे समय से यह मांग थी जिसे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने पूरा कर कर्मचारियों को पूरी तरह है अपने साथ जोड़ लिया है। जिसका लाभ उन्हें आने वाले विधानसभा चुनाव में मिलते दिख रहा है।

दो साल पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजस्थान में मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना लांच की थी। जिसमें प्रदेश के सभी लोगों को कैशलेस उपचार की सुविधा देने का प्रावधान किया गया था। गहलोत ने उसी योजना को इस बार बढ़ाकर प्रदेश के हर परिवार को 25 लाख रुपए तक निशुल्क उपचार देने की घोषणा की है। इस योजना में शामिल परिवार को दस लाख रुपए तक का दुर्घटना बीमा का लाभ भी मिलेगा। यह पूरे देश में अपने आप में एक अनूठी योजना है। जिसमें प्रदेश के सभी बीपीएल, अन्नपूर्णा योजना, संविदा कर्मी, नरेगा मजदूर, लघु कृषक सहित काफी परिवार निशुल्क शामिल होते हैं। जबकि 850 रूपये का वार्षिक शुल्क देकर अन्य सभी वंचित परिवार भी इस योजना में शामिल हो सकते हैं। ऐसी योजना देश के अन्य किसी प्रांत में नहीं चल रही है। इस योजना में अब तक लाखों लोग

निशुल्क उपचार करवा चुके है।

मुख्यमंत्री गहलोत ने राजस्थान की सीमा में सरकारी रोडवेज की बसों में महिलाओं को किराये में 50 प्रतिशत छूट देने की भी घोषणा की है। प्रदेश में 8 हजार आंगनबाड़ी और 2000 मिनी आंगनबाड़ी केंद्र खुलेंगे। कक्षा 1 से 8 तक के स्कूली बच्चों की तर्ज पर आंगनबाड़ी केंद्रों के बच्चों को भी दो सेट यूनिफार्म दिये जायेंगें। पांच लाख नए परिवारों को महिला स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा जाएगा। स्कूली बच्चों को अब मिड डे मील में हर दिन दूध मिलेगा।

संभाग मुख्यालयों पर 100 महिलाओं और जिला मुख्यालयों पर 50 महिलाओं के लिए इंदिरा गांधी वर्किंग वुमन हॉस्टल खोले जाएंगे। वहीं कामकाजी महिलाओं के लिए 500 प्रियदर्शिनी डे केयर सेंटर खोले जाएंगे। ग्रामीण इलाकों में भी महिलाओं के लिए इंदिरा गांधी महिला हॉस्टल खोले जाएंगे। प्रदेश में 18 गर्ल्स कॉलेज खुलेगें। जनजाति क्षेत्रों में 250 मां-बाड़ी सेंटर खोले जाएंगे। प्रदेश में वृद्धावस्था पेंशन को भी बढ़ाकर एक हजार रूपये प्रतिमाह कर दिया गया है। राजस्थान की गहलोत सरकार प्रदेश के सीनियर सिटीजन को अयोध्या स्थित रामलाल मंदिर समेत पांच नए तीर्थ स्थल के दर्शन करवाएगी। ये दर्शन वरिष्ठ नागरिक तीर्थ यात्रा योजना के तहत करवाये जाएगें। इस योजना के तहत वर्तमान में देश-विदेश के 14 तीर्थ स्थलों पर दर्शन करवाए जा रहे है जिसे बढ़ाकर अब 20 से ज्यादा किया जा रहा है।

घरेलू बिजली उपभोक्ताओं को अब 50 के बजाय 100 यूनिट प्रतिमाह निशुल्क बिजली दी जाएगी। इससे अधिक विद्युत उपयोग करने वाले घरेलू उपभोक्ताओं को टैरिफ के अनुसार पूर्ववत छूट जारी रहेगी। वही किसानों को अपने खेतों में बने ट्यूबवेल पर प्रतिमाह 2000 यूनिट तक बिजली निशुल्क दी जाएगी। उज्जवला योजना में शामिल राजस्थान के 76 लाख परिवारों को 500 रूपये की दर से एक साल में 12 घरेलू गैस सिलेंडर उपलब्ध करवाए जाएंगे।

राजस्थान सरकार के बजट में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने इस बार यूथ को भी बहुत कुछ दिया है। सबसे बड़ी राहत कॉम्पिटिशन एग्जाम देने वाले कैंडिडेट्स को मिली है। सभी भर्ती परीक्षाओं को मुफ्त करने का फैसला लिया गया है। इसके लिए वन टाइम रजिस्ट्रेशन कराना होगा। इस फैसले से 50 लाख से ज्यादा कैंडिडेट्स को फायदा होगा। साथ ही प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए डिजिटल लाइब्रेरी और आवासीय हॉस्टल भी बनेंगे। सबसे बड़ी घोषणा पहली से 12वीं तक के स्टूडेंट के लिए है। इन्हें फ्री में पढ़ाया जाएगा।

सभी जिलों में ऑनलाइन सुविधा युक्त एग्जामिनेशन सेंटर बनाए जाएंगे। प्रतियोगी परीक्षा में अब बायोमेट्रिक तकनीक से अटेंडेंस होगी। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए जिला मुख्यालय पर स्टडी सेंटर के साथ आवासीय हॉस्टल बनेंगे। इसमें 100 युवा एक साथ ठहर सकेंगे। राजस्थान में ब्लॉक मुख्यालयों पर सावित्री बाई वाचनालय और डिजिटल लाइब्रेरी बनाई जाएगी। सरकारी स्कूलों में ट्रांसपोर्ट वाउचर स्कीम शुरू की जाएगी। इसके तहत बच्चे घर से स्कूल और स्कूल से घर तक 75 किलोमीटर तक रोड़वेज बसों में फ्री सफर कर सकेंगे।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा पेश किए गए बजट में निजी वाहनों को टोल मुक्त करने की मांग पूरी नहीं की गई है। लोगों को आशा है बजट पास करते वक्त उस पर भी मुख्यमंत्री कार्यवाही करेंगे। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत इन दिनों पूरे कॉन्फिडेंट नजर आ रहे हैं। हाल ही में उन्होंने कहा है कि वह कभी भी राजनीति से संन्यास नहीं लेंगे। जो इस बात की ओर इशारा है कि जब भी कांग्रेस की सरकार सरकार बनेगी प्रदेश में वही मुख्यमंत्री होंगे। गहलोत को पूरा भरोसा है कि उनके द्वारा पेश किए गए बजट से खुश होकर प्रदेश की जनता अगली बार फिर कांग्रेस की सरकार बनाएगी। अब देखना यह है कि गहलोत की सोच कितनी साकार होती है। प्रदेश की जनता अगली बार फिर कांग्रेस की सरकार बनाती है या कांग्रेस को हराती है। इस बात का पता तो चुनाव के नतीजों के बाद ही चलेगा। बहरहाल मुख्यमंत्री गहलोत बेफिक्र होकर धड़ल्ले से अपनी सियासी पारी खेल रहे हैं।

रमेश सर्राफ धमोरा
झुंझुनू,
राजस्थान

भारतीयों को मॉरीशस क्यों प्रिय

अफ्रीकी महाद्वीप के दक्षिण-पूर्व तट से लगभग 900 किलोमीटर दूर हिंद महासागर के तट पर और मेडागास्कर के पूर्व में स्थित द्वीपीय देश मॉरीशस भारतीयों के लिए काफी आकषर्क स्थान है।

अपने झील-झरनों, हरे-भरे जंगलों और प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर मॉरीशस हर नवविवाहित जोड़े के लिए बरसों से हनीमून मनाने का स्थान बना हुआ है परंतु क्या आप जानते हैं कि इसके अलावा भी एक कारण है जिसके लिए मॉरीशस भारतीयों को बहुत प्रिय है।

सुंदर पर्यटक स्थल होने के कारण मॉरीशस में केवल हनीमून मनाने वाले पर्यटक ही नहीं आते, बल्कि 'टैक्स हैवन' के नाम से मशहूर इस छोटे से द्वीप पर हर उस व्यक्ति की नजर बनी रहती है, जो किसी न किसी तरह से भारत में आयकर की चोरी करना चाहता है। चूंकि भारत और मॉरीशस के बीच हुई 'दोहरे करारोपण संधि' के तहत भारतीय कंपनियां मॉरीशस की किसी कंपनी से समझौता करके भारत में एफडीआई द्वारा निवेश करवा लेती हैं। इस निवेश को निवेशकों की भाषा में 'मॉरीशस रूट' कहा जाता है। भारत में 'मॉरीशस रूट' के तहत हुए निवेश पर कोई टैक्स नहीं देना होता। ऐसा करने से ये सभी कंपनियां, जो भारत में निवेश करवाती हैं, कैपिटल गेन्स टैक्स देने से बच जाती हैं। कई वर्ष पहले इंटरनेशनल कंसोर्टयिम ऑफ इनवेस्टीगेटिव जर्नलिस्ट्स (आईसीआईजे) की एक रिपोर्ट सार्वजनिक हुई थी। रिपोर्ट के मुताबिक भारत की कई कंपनियों ने 1982 में हुई इस संधि का दुरु पयोग किया है।

इस समझौते के मुताबिक भारतीय कंपनियों को मॉरीशस में टैक्स रेजीडेंसी की सुविधा मिल जाती है, जिस कारण वे जीरो कैपिटल गेन्स वाली श्रेणी में आ जाती थीं। जाहिर सी बात है कि 'मॉरीशस रूट' से अपना ही पैसा घुमा कर ये कंपनियां अपना निवेश वापस भारत में ले आती हैं। इसी के चलते देश को करोड़ों के टैक्स का चूना लग जाता है जबकि इस टैक्स के पैसे को देश के विकास कार्यों में लगाया जा सकता था पर ऐसा नहीं हो रहा। 'मॉरीशस रूट' हो या किसी अन्य 'टैक्स हैवन' देश से आने वाला निवेश, हमारे देश में ऐसा काफी बड़ी मात्रा में हो रहा है। देश की कई नामी कंपनियां ऐसा कई बरसों से कर रही हैं। नियमों में इस कमी का फायदा उठा कर ये लोग टैक्स चोरी कर देश में होने वाले विकास को पीछे धकेल रहे हैं। आम आदमी को सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाएं समय पर नहीं दी जातीं तो इसके पीछे टैक्स में होने वाली चोरी ही मुख्य कारण होता है।

सरकार चाहे केंद्र की हो या राज्य की, विकास कार्यों और सरकारी कर्मचारियों के वेतन के भुगतान के लिए टैक्स पर ही निर्भर करती है। यदि टैक्स में कमी आती है तो विकास कार्यों में भी बाधा आएगी। 'मॉरीशस रूट' से आने वाले निवेश केवल एफडीआई के जरिए ही नहीं होते। उद्योगपतियों के अलावा भ्रष्ट नेता और अफसर भी इसका फायदा उठाते हैं। ये लोग भ्रष्टाचार से कमाए अपने काले धन को हवाला के जरिए विदेशों में स्थित मॉरीशस जैसे 'टैक्स हैवन' देशों में भेजते हैं। वहां पर कुछ शैल कंपनियों की मदद से उसी पैसे को कुछ चुनिंदा कंपनियों के शेयरों को मन-माने दाम पर खरीदवाते हैं।

भारत की कंपनियों के शेयरों का बढ़े हुए दाम पर बिकना शेयर मार्केट में अच्छा माना जाता है। यदि ऐसा नियमों के दायरों में हो तो यह सही होता है परंतु 'मॉरीशस रूट' से होने वाले ऐसे निवेश नियम-कानून की धज्जियां उड़ा कर होते हैं। जैसे ही किसी कंपनी के शेयर का दाम बढ़ता है, देश के भोले-भाले छोटे और मध्यम निवेशक भी मुनाफा कमाने की नीयत से इसमें निवेश करते हैं परंतु असल में उस कंपनी के शेयर की असल कीमत इससे काफी कम होती है। मिसाल के तौर पर देश के एक राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री के बेटे की एक ठंडी पड़ी कंपनी के 10 रु पये प्रति शेयर को देश के एक भगोड़े ने 96,000 रु पये प्रति शेयर पर खरीदा। आरोप है कि यह अपने ही काले धन को घुमाकर किया गया। इसकी जांच के लिए दिल्ली उच्च न्यायालय में एक याचिका भी दायर की गई। कोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय को नोटिस दे कर इसकी जांच के आदेश दिए परंतु जांच को लंबा खींचने और ढुलमुल रवैया अपनाने से इस मामले की जड़ तक नहीं पहुंचा जा सका। जाहिर है कि ऐसा होने पर लोगों का जांच एजेंसियों पर से भरोसा भी डगमगाने लगता है।

इसलिए जब भी कभी ऐसा विवाद खड़ा हो तो मामले की सघन जांच होना बहुत ही जरूरी हो जाता है। ऐसे में अपनी 'योग्यता' के लिए प्रसिद्ध देश की प्रमुख जांच एजेंसियां भी शक के घेरे में आ जाती हैं। इन एजेंसियों पर विपक्ष द्वारा लगाए गए 'गलत इस्तेमाल' के आरोप सही लगते हैं। मामला चाहे छोटे घोटाले का हो या बड़े घोटाले का, एक ही अपराध के लिए दो मापदंड कैसे हो सकते हैं?

यदि देश का आम आदमी या किसान बैंक द्वारा लिए गए ऋण चुकाने में असमर्थ होता है तो बैंक की शिकायत पर पुलिस या जांच एजेंसियां तुरंत कड़ी कार्रवाई करती हैं। उसकी दयनीय दशा की परवाह न करके कुर्की तक कर डालती हैं परंतु बड़े घोटालेबाजों के साथ ऐसी सख्ती क्यों नहीं बरती जाती? जैसा कि इस कॉलम में पहले भी लिख चुके हैं, घोटालों की जांच कर रही एजेंसियों का निष्पक्ष होना बहुत जरूरी है। एक जैसे अपराध पर, आरोपी का रुतबा देखे बिना, अगर एक सामान कार्रवाई होती है, तो जनता के बीच संदेश जाता है कि जांच एजेंसियां अपना काम स्वायत्तता और निष्पक्षता से कर रही हैं।

सिद्धांत यह होना चाहिए कि किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा। चाहे वो किसी भी विचारधारा या राजनैतिक दल का समर्थक क्यों न हो। कानून अपना काम कानून के दायरे में ही करेगा। जरूरी है कि मॉरीशस जैसे देश के प्राकृतिक खूबसूरती के लिए जाने जाने वाले द्वीपों को पर्यटन के लिए ही जाना जाए न कि वित्तीय घोटालों में लिए जाने जाने वाले 'मॉरीशस रूट' जैसे अलंकारों के लिए।

विनीत नारायण

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच मनाया गया वेलेंटाइन-डे

- संवाददाता -
अंबिकापुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच 14 फरवरी मंगलवार को वेलेंटाइन-डे मनाया गया। शहर के पार्कों सहित अन्य स्थानों पर पुलिस की कड़ी नजर रही। वहीं हिन्दू संगठन बजरंग दल का भी कड़ी निगरानी रहा। बजरंग दल द्वारा रैली की शक्ल में शहर के पार्कों के आसपास भ्रमण करते नहर है। ऐसे में प्रेमी युगलों ने टॉकिज, होटल व अन्य एकांत जगहों में अपना वक्त बिताया। प्यार का इजहार करने का त्योहार वेलेंटाइन-डे मंगलवार को पुलिस के कड़े पहरे के बीच मनाया गया। शहर के सभी पार्कों में सुरक्षा व्यवस्था के नाम पर सुबह से ही पुलिस बल तैनात रहा। कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच युवक-युवतियां सुबह से ही पार्क में घूमते नजर आए। इसके साथ ही कई प्रेमी

युगलों ने होटलों में खाने की टेबल पर वक्त बिताया तो कुछ युवाओं ने टॉकिज में मूवी का आनंद लेकर वेलेंटाइन डे मनाया। पुलिस के पहरे को देखते हुए कुछ पार्कों से लौट गए और अन्य जगह जाकर वेलेंटाइन डे मनाया। संजय पार्क, वाटर पार्क, ऑक्सीजन पार्क, कचरा पार्क सहित शहर के टॉकिजों के बाहर भी पुलिस का कड़ा पहरा लगा रहा। वेलेंटाइन डे को लेकर अक्सर चर्चा में रहा है। इस वर्ष भी वेलेंटाइन डे पर बजरंग दल की विशेष निगरानी रही। बजरंग दल के पदाधिकारियां व कार्यकर्ताओं ने बाइक रैली के माध्यम से शहर के विभिन्न पार्कों, टॉकिजों में भ्रमण करते नजर आए।प्यार का इजहार करने का त्योहार वेलेंटाइन-डे प्रेमी जोड़ों के लिए बेसबरी से इंतजार रहता है। लोगों ने गुलाब का फूल, पुष्प गुच्छा, आकर्षक गिफ्ट देकर प्रेम का इजहार किया। इस लिए शहर में गुलाब फूल की बिक्री खुब हुई। फूल व्यवसायियों ने इसके लिए पहले से ही तैयारी कर ली थी।

बास्केटबॉल खिलाड़ी शबनम को रेलवे में मिला जॉब

- संवाददाता -
अंबिकापुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

इंटरनेशनल बास्केटबॉल खिलाड़ी शबनम एक्का का चयन रेलवे में खेल कोटे से हुआ है। मुकाम हांसिल करने के लिए शबनम को ईंट भट्ठों में मजदूरी तक करनी पड़ी थी। शबनम एक्का सरगुजा जिले के सीतापुर थाना क्षेत्र के ग्राम पेटला की रहने वाली है। वर्ष 2017 में टेंलेंट सर्च प्रोग्राम जिले के पूर्व कलेक्टर आर प्रसन्ना के पहल पर स्थानीय कोच राजेश प्रताप सिंह और इन्टरनेशनल कोच के राजेश्वर राव द्वारा चलाया गया था। टेंलेंट सर्च प्रोग्राम के तहत बास्केटबॉल खिलाड़ी के रूप में शबनम एक्का का चयन राजनांदगांव के लिए हुआ था। यहां चयनित खिलाडियों का कैंप आयोजित किया गया था। कैंप में बेतहर प्रदर्शन करने पर शबनम एक्का का चयन भारतीय खेल प्राधिकरण प्रशिक्षण केन्द्र राजनांदगांव की आवासीय योजना में किया गया। इसके बाद वह लगातार बेहतर प्रदर्शन करती गई।

शबनम ने पेरिस विश्व खेल में भी भाग ले चुकी है। इसके अतिरिक्त वह जनवरी 2022 में इंदौर में आयोजित जूनियर राष्ट्रीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त की थी। इसके अलावा वह कई अन्य राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत चुकी है। बास्केटबॉल में उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए शबनम एक्का का चयन दक्षिण-पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर में किया गया है। शबनम का चयन रेलवे में होने से जिले के साथ-साथ प्रदेश का नाम रोशन की है। इसके चयन पर जिला बास्केटबॉल संघ के अध्यक्ष आदित्येशवर शरण सिंह देव एवं सचिव राजेश प्रताप सिंह ने शुभकामनाएं दी है। शबनम एक्का काफी गरीब परिवार से है। इसके पिता व मां मजदूरी करते हैं। खेल व जरूरतों को पूरा करने के लिए शबनम को भी ईट भट्ठों में मजदूरी करनी पड़ती थी। इसके पिता खेल के खिलाफ थे। जबकि मां तेरेसा एक्का का पूरा सहयोग मिला। बेटी का सपना पूरा करने के लिए मां को कई कठिन काम करना पड़ा।

मार्च ऑफ लव यात्रा निकाल कर सड़क सत्याग्रह की टीम ने कलेक्टर के माध्यम से मुख्यमंत्री को भिजवाया प्रेम पत्र

- संवाददाता -
अंबिकापुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

सड़क सत्याग्रह की टीम द्वारा सड़क जैसी सुविधा को लेकर लगातार आवाज उठाई जा रही है। मंगलवार को सड़क सत्याग्रह की टीम ने मार्च ऑफ लव यात्रा निकाल कर कलेक्टर के माध्यम से मुख्यमंत्री को प्रेम पत्र भिजवाया।

सड़क सत्याग्रह ने कहा कि सरगुजा संभाग कमाई ,दवाई और पढ़ाई के लिए रायपुर बिलासपुर आदि पर आश्रित है। यह संभाग रेल सुविधा से भी वंचित है। इसलिए सड़कें यहां की जीवन रेखा है। संभाग को रायपुर, रांची, बनारस जैसे मुख्य शहरों से जोडने वाली सड़कें खराब है, और कई वर्षों से निर्माणाधीन है। इसी प्रकार संभाग के मुख्य शहर अंबिकापुर नगर निगम क्षेत्र की सड़कों का भी बुरा हाल है। भूपेश बघेल को मुख्यमंत्री बनाने में सरगुजा संभाग की जनता व विधायकों ने बहुत निर्णायक भूमिका निभाई है। इसके बावजूद मुख्यमंत्री सरगुजा से रूठे हुए प्रतीत होते हैं !और अम्बिकापुर शहर व संभाग की सड़क समेत सभी प्राजेक्ट्स को रोका जा रहा है ऐसी धारणा लोक मानस में है। ऐसा लगता है की मुख्यमंत्री जी हमसे रूठे हुए हैं इसलिए आज प्रेम दिवस 14 फरवरी को आम जनता का एक प्रेम मार्च , मार्च ऑफ लव आयोजित किया गया। यह कलेक्टर के माध्यम से मुख्यमंत्री से प्रेम का इज़हार करने का कार्यक्रम था। सड़क सत्याग्रह की टीम ने मुख्यमंत्री से सरगुजा की सड़कों के विकास के लिए 100 करोड़ रुपए का विशेष पैकेज देने की मांग की। सड़क सत्याग्रह की टीम ने अपने इस रैली के दौरान पुलवामा में शहीद लोगों को 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी।

प्रदेश की कांग्रेस सरकार में गरीब परिवार रह गए पीएम आवास से वंचित

- संवाददाता -
अंबिकापुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

भाजपा के मोर आवास मोर अधिकार अभियान अंतर्गत आज उदयपुर मंडल के केदमा शक्ति केंद्र के मतरिंगा ग्राम पंचायत में भाजपा मंडल सह प्रभारी एवं भाजपा जिला सह संवाद प्रमुख रूपेश दुबे तथा जिला संवाद प्रमुख संतोष दास की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सैकड़ों ग्रामीणों के फॉर्म भरे गए जिनको भूपेश सरकार ने अपने कार्यकाल में आवास स्वीकृत नहीं किया। इस अवसर पर ग्रामीणों को संबोधित करते हुए मंडल प्रभारी रूपेश दुबे ने कहा कि मोर आवास मोर अधिकार अभियान भारतीय जनता पार्टी ने उन गरीब हितग्राहियों के लिए चलाया है जिनको प्रदेश की भूपेश सरकार ने अब तक आवास नहीं दिया, मोदी सरकार का सपना था कि 2022 तक देश में सभी गरीबों पक्का मकान मिले लेकिन कांग्रेस के भूपेश सरकार ने छत्तीसगढ़ में सरकार बनते ही राज्यांश नहीं दे कर लाखों गरीबों के पक्के मकान बनने नहीं दिए, इस आवेदन पत्र के माध्यम से जनता यह मांग करती है उनकी आवास तत्काल स्वीकृत की जाए अन्यथा बृहद विरोध प्रदर्शन किया जायेगा।

इस अवसर पर जिला संवाद प्रमुख संतोष दास ने कहा कि गरीबों का छत छीन कर भूपेश सरकार ने छत्तीसगढ़ की जनता के साथ घोर अन्याय किया है जिसका खामियाजा आने वाले चुनाव में उनको भुगतना पड़ेगा, गरीब जनता चिंता ना करे, भाजपा की सरकार छत्तीसगढ़ में बनते ही मोदी जी के सपनों के अनुरूप सभी को पक्का मकान मिलेगा। कार्यक्रम का संचालन मंडल अध्यक्ष अनिल सिंह ने तथा आभार प्रदर्शन मंडल महामंत्री चंद्र बसु यादव ने किया। इस अवसर पर मंडल मीडिया प्रभारी बृजेश चतुर्वेदी, मंडल मंत्री संतोष मझवार, सरपंच गड़ा राम, टेटकु राम , संतोष कुमार सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

पुलिस अधीक्षक सूरजपुर ने मार्शल आर्ट में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर मेडल अर्जित करने वाले छात्र-छात्राओं को दी शुभकामनाएं

- संवाददाता -
सूरजपुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

पुलिस अधीक्षक रामकृष्ण साहू (भा.पु.से.) से थांग-ता मार्शल प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्र-छात्राओं ने मुलाकात की। पुलिस अधीक्षक ने सभी खिलाड़ियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और उन्हें निरंतर मेहनत तथा लगन से अभ्यास करने प्रोत्साहित किया है। दिनांक 1 से 3 फरवरी 2023 तक तमिलनाडु कन्याकुमारी में नेशनल थांग-ता मार्शल आर्ट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें सूरजपुर जिले के 10 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया

और शानदार मार्शल आर्ट का प्रदर्शन करते हुए निकिता यादव ने सिल्वर

मेडल, प्रीति सिंह, सोनू राजवाड़े व कुंवर सिंह ने ब्रांज मेडल अर्जित कर सूरजपुर जिले सहित प्रदेश का नाम रौशन किया है।

इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने कहा कि यह जिले के लिए गर्व की बात है कि यहां के खिलाड़ी नेशनल स्तर पर अपनी खेल प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं, आज खेल के क्षेत्र में सूरजपुर जिला काफी आगे निकल चुका है। उन्होंने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आगे सफलता के नए आयाम स्थापित करें और देश, प्रदेश तथा जिले का नाम रोशन करें। इस दौरान खिलाड़ी चंदन कुमार, डोली कुजूर, हेमन्त राजवाड़े, विवेक राजवाड़े, सचिन सिंह व आलमगीर मौजूद रहे।

मानकों का पालन नहीं किए जाने पर सीए संजय अग्रवाल की सीएएसएस की सदस्यता दो वर्षों के लिए निलंबित

- संवाददाता -
अंबिकापुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

चार्टर्ड एकाउंटेंट्स सोसाइटी ऑफ सरगुजा की विशेष बैठक स्थानीय होटल पंचानन में 3 फरवरी को आयोजित की गई। बैठक में चार्टर्ड एकाउंटेंट्स द्वारा किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों के कानूनी पहलुओं एवं अन्य तकनीकी विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई। इस दौरान सदस्यों ने सर्वसम्मति से महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए एवं निराकरण किया गया साथ ही सदस्यों से संबंधित समस्याओं का बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर संस्था के नियमों एवं सीए प्रोफेशन से संबंधित मानकों का पालन नहीं किए जाने के कारण सीए संजय अग्रवाल निवासी बरेजपारा अम्बिकापुर के सीएएसएस की सदस्यता दो वर्षों के लिए निलंबित करने का निर्णय लिया है। सभा में संगठन के सभी सदस्यों ने अपनी-अपनी बात रखी और संस्था एवं प्रोफेशन की बेहतरी के लिए अपने सुझाव दिए।

नशे के अवैध कारोबार पर चैकी बसदेई पुलिस की कार्रवाई, 13 हजार रूपये का गांजा जफ्त,एक गिरफ्तार

- संवाददाता -
सूरजपुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

पुलिस महानिरीक्षक सरगुजा रेंज श्री रामगोपाल गर्ग (भा.पु.से.) के सतत मार्गदर्शन में पुलिस अधीक्षक श्री रामकृष्ण साहू (भा.पु.से.) के निर्देश के बाद अवैध कारोबार करने वालों पर पुलिस लगातार ताबड़तोड़ कार्रवाई करने में जुटी हुई है। इसी क्रम में चौकी बसदेई पुलिस ने मुखबीर की सूचना पर 650 ग्राम गांजा व मोटर सायकल सहित 1 व्यक्ति को गिरफ्तार किया है।

मंगलवार को चौकी बसदेई पुलिस को मुखबीर से सूचना प्राप्त हुआ कि एक व्यक्ति मोटर सायकल में गांजा लेकर खोंपा की ओर से बसदेई की ओर जा रहा है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मधुलिका सिंह व एसडीओपी सूरजपुर प्रकाश सोनी मार्गदर्शन में चौकी बसदेई पुलिस की टीम ने ग्राम लोधिमा में घेराबंदी कर मोटर सायकल सहित पारस राम बरगाह पिता रामलाल बरगाह उम्र 33 वर्ष निवासी पोकसरी, थाना बतौली को पकड़ा जिसके कब्जे से 650 ग्राम गांजा कीमत करीब 13000 रूपये का जप्त किया है। मामले में गांजा एवं परिवहन में प्रयुक्त मोटर सायकल जप्त कर आरोपी के विरूद्ध धारा 20बी एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही कर गिरफ्तार किया गया है। इस कार्यवाही में चौकी प्रभारी बसदेई बृजेश यादव, एएसआई लक्ष्मी प्रसाद गुप्ता, प्रधान आरक्षक महेन्द्र यादव, आरक्षक विश्वजीत सिंह, सुरेश साहू, निमेश जायसवाल, रामसागर साहू व देवदत्त दुबे सक्रिय रहे।

भोजपुरी स्टार पवन सिंह एवं कमेडियन सुनिल पाल आज मचाएंगे धूम

- संवाददाता -
अम्बिकापुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

मैनपाट महोत्सव के दूसरे दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम में 15 फरवरी 2023 को मशहूर भोजपुरी गायक पवन सिंह व इंडियन कॉमेडियन सुनिल पाल धूम मचाएंगे। कार्यक्रम में बचपन का प्यार फेम सहदेव दिर्दो, छत्तीसगढ़ी लोक गायिका आरू साहू व जशमीत कौर, लिटिल चैंप गायक प्रियांशु मिश्रा, अमन श्रीवास्तव, क्लासिकल डांसर रित्विका बनर्जी, छत्तीसगढ़ी लोक संगीत लोरिक चंदा, गायक चंदन दास ब्रजेष बैण्ड एवं पियानों वादन रजी मोहम्मद के द्वारा की जाएगी।

इसके साथ ही संत युनीन हाई स्कूल बोदा के बच्चों द्वारा भरतनाट्यम, केजीवीवी द्वारा राजस्थानी डांस, एकलव्य विद्यालय मैनपाट के द्वारा करमा एवं मिक्स नृत्य, सेजस हिन्दी मीडिएम नर्मदापुर द्वारा राजी परता राजी एवं करमा नृत्य सुभ्रांषु तिवारी द्वारा फिल्मी गीत, सेजस बतौली द्वारा छत्तीसगढ़ी नृत्य, विवेकानंद स्कूल द्वारा नृत्य, कन्या षिक्षा परिसर द्वारा क्लासिकल नृत्य प्रस्तुत किया जाएगा।

भारत स्काउट गाइड संघ सूरजपुर को मिला नया कार्यालय,शिक्षा मंत्री के हाथों हुवा उद्घाटन

स्काउट गाइड जिला कार्यालय वाला राज्य का पहला जिला बना सूरजपुर

सूरजपुर, 14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

भारत स्काउट एवं गाइड जिला संघ के जिलाध्यक्ष व पदाधिकारियों द्वारा शिक्षा मंत्री जी से विगत वर्षों से माँग की जा रही थी कि स्काउट गाइड के लिए नवीन कार्यालय की आवश्यकता है। जिस पर शिक्षा मंत्री जी ने सकारात्मक विचार किया।

कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

- संवाददाता -
अम्बिकापुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

सरगुजा क्षेत्र में वामपंथी आंदोलन के सूत्रधार कामरेड अशोक सिन्हा एवं उनके द्वारा बताए गए रास्ते पर चलकर आंदोलन को मजबूती प्रदान करने वाले स्वर्गीय कामरेड अजीत सिन्हा की एक साथ क्रमशः चौथी एवं 18 मई बरसी विगत 12 फरवरी को सरगुजा क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर मनाई गई । ग्राम बरकेला में साथी गंगा यादव, पियरसिंह, राम भजन, फादर राम आदि के नेतृत्व में तथा ग्राम राई खुर्द लुण्ड्रा में साथी ऋषि कुमार गुप्ता, बलवीर नागेश, धर्म दास नागेश, दिल साई नागेश आदि के नेतृत्व में तथा ग्राम जमीरा धौलपुर में साथी रामलाल, सोनू सिंह एवं ग्राम गुजरवार में साथी रोशन नागेश श्रीमती मीना सिंह टेकाम एवं ग्राम कल्याणपुर में कॉमरेड बाल सिंह, सुरेंद्र लाल सिंह होलसाय, माधव सिंह, बैजनाथ, अली राजवाड़े, पीला दास, जगदास, सौकी प्रधान, समय लाल तिर्की, महेश सिंह, कमलेश सिंह,(बी डी सी), अधिवक्ता विमल सिंह आदि के उपस्थिति में स्वर्गीय आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित किया गया ।इस अवसर पर सभाओं में साथी बाल सिंह साथी सीपी शुक्ला साथी ऋषि गुप्ता, साथी प्रकाश नारायण, साथी कृष्ण कुमार , साथी रामलाल, रोशन नागेश,साथी रामधनी,श्रीमती मीना सिंह द्वारा सभा को संबोधित किया गया कामरेड अशोक सिन्हा एवं कामरेड अजीत सिन्हा द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला गया की गई एवं उनके द्वारा बताए गए रास्ते पर चलने का संकल्प लेकर क्षेत्र में कम्युनिस्ट आंदोलन एवं मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर स्व कामरेड एस सुदेवन विश्रामपुर को विशेष रूप से याद किया गया एवम वाम आंदोलन को इस छेत्र में फैलाने के उनके योगदान की सराहना की गई तथा श्रध्दांजलि अर्पित किया गया ।ग्राम कल्याणपुर की श्रद्धांजलि सभा में श्रीमती कामिनी सिन्हा एवं श्रीमती भगवती शुक्ला विशेष रूप से उपस्थित थीं ।दोनों ने सभा को संबोधित किया ।

कलेक्टर ने ली सप्ताहिक समय सीमा की बैठक

- संवाददाता -
सूरजपुर, 14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

कलेक्टर सुश्री इफ्फत आरा ने समय-सीमा की बैठक में विभिन्न विभागों द्वारा संचालित शासन की कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी ली एवं शासन की योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ दिलाने बेहतर क्रियान्वयन करने के निर्देश दिए। उन्होंने केशवनगर गौठान के गोबर से निर्मित पेंट, डिस्टेंपर से शासकीय भवनों में रंग रोगन करने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने जिले में संचालित शासकीय उचित मूल्य की दुकान को मॉडल के रूप में विकसित करने के लिए सीसीटीवी, शौचालय की व्यवस्था, पानी की व्यवस्था, बैठने की व्यवस्था, डिस्प्ले बोर्ड, मूल्य सूची आदि सभी सूचनाएं डिस्प्ले करने एवं सभी शासकीय उचित मूल्य की दुकान को रंग रोगन करने निर्देशित किया।कलेक्टर सुश्री आरा ने इंपैक्ट इंडिया फाउंडेशन लाइफ लाइन एक्सप्रेस के तहत विश्रामपुर एवं कमलपुर में संभावित 25 फरवरी से 17 मार्च तक लाइफ लाइन एक्सप्रेस के माध्यम से निशुल्क स्वास्थ्य कार्यक्रम आयोजित किया जाना है के संबंध में स्वास्थ्य विभाग एवं अन्य विभाग से व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली एवं व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश दिए। लाइफ लाइन एक्सप्रेस में आंख की जांच एवं मोतियाबिंद की सर्जरी, कान की जांच एवं कान की सर्जरी, मुड़े हुए पैर का परीक्षण एवं सर्जरी, कटे-फटे ओठ की जांच एवं सर्जरी, दांत की जांच व उपचार, स्तन और ग्रीवा कैंसर जागरूकता एवं परीक्षण निःशुल्क स्वास्थ्य इलाज किया जाएगा।

क्या मनेंद्रगढ़ विधानसभा से ही एक नए राजनीतिक सूरज का होगा उदय?

» क्या मनेंद्रगढ़ विधानसभा से ही सूरज महंत अपनी राजनीतिक शुरुआत करेंगे?

» क्या 'शक्ति' से राजनीतिक बौद्धिक 'शक्ति' लेकर मनेंद्रगढ़ विधानसभा में ही राजनीतिक सूरज चमकेगा?

» राजनीतिक फिजाओं में यह सुगबुगाहट जोरों पर,कयासों का दौर गर्म!

- रवि सिंह -
एमसीबी 14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

प्यासे होठों पर ही होती है मीठी बातें,प्यास बुझ जाए तो फिर लोगों के लहजे ही बदल जाते है, ये लाइनें मनेंद्रगढ़ विधानसभा के प्रत्याशियों के लिए बिल्कुल सटीक बैठती दिख रही है, विधानसभा चुनाव जैसे-जैसे करीब आ रहे है क्षेत्र में नेताओं के आवागमन से जिले में चुनावी सरगर्मियां बढ़ी है आम जनों में कयासों का दौर चल रहा है सभी अपने-अपने स्तर में अपने आंकड़े पान ठेला, चौक-चौराहा,एवं दुकानों में परोस रहे हैं चुनाव की सुगबुगाहट शुरू हो चुकी है,सोशल मीडिया में भी बाजार गर्म हो चला है इस विधानसभा के फिजाओं में बड़ी राजनीतिक उलटफेर होने की प्रबल संभावना दिख रही है देखना यह है की ऊंट किस करवट बैठता है।

इसी बीच शक्ति विधानसभा के विधायक एवं क्षेत्र के पूर्व सांसद विधानसभा अध्यक्ष चरणदास महंत उनकी पत्नी सांसद ज्योत्सना महंत पुत्र सूरज महंत का भी लगातार दौरा उनका मनेंद्रगढ़ विधानसभा के लोगों से मुस्कुरा कर मिलना और हर किसी को अहमियत देना, अपने कार्यकर्ताओं पर किसी तरह का टीका टिप्पणी ना करना उनका सहज सरल होना, कहीं ना कहीं मनेंद्रगढ़ विधानसभा के लिए एक छुपा संदेश देता दिख रहा है,कयासों के बीच यह बात स्वतः स्पष्ट होती दिख रही है कि क्या मनेंद्रगढ़ विधानसभा सीट से ही एक नए सूरज का उदय होगा? क्या सूरज महंत की राजनीतिक शुरुआत इसी विधानसभा क्षेत्र से होगी? महंत जी के चेहरे की मुस्कुराहट और एकाएक उनके व्यवहार में सकारात्मक सोच व परिवर्तन कई सवालों को जन्म दे रहे है यहां की राजनीतिक फिजाओं में अटकलों से बाजार गर्म है, फूट डालो राज करो वाली पद्धति पर चलने वाले क्षेत्र के विधायक इन दिनों सभी कार्यकर्ताओं को एकजुट होने की बात कर रहे हैं जयचंद दोगला एकल बत्ती कनेक्शन नटवर लाल जैसे शब्दों को इजाद कर अपने कर्मठ कार्यकर्ताओं का नया नया नाम करण करने में माहिर माटी पुत्र एकजुट होकर चलो वाली पद्धति की राह पर चल पड़े है वहीं उनके खेमे में भगदड़ का माहौल है विधायक समर्थक अभी हरिराम नाई की तलाश में बेहद परेशान देखे जा रहे हैं विधायक समर्थकों ने ठाना है हरी राम नाई कौन है? उसका पता लगाना है।

क्या पुत्र सूरज महंत के लिए विधानसभा में राजनीतिक उलटफेर होगी?

यदि हम पिछले दो संसदीय चुनाव की बात करें तो महंत जी के पक्ष में अविभाजित कोरिया जिले के मतदाताओं का काफी कम रुझान देखने को मिला है उनके पक्ष में काफी कम मतदान हुए हैं कहीं ना कहीं क्षेत्र की जनता ने उन्हें नकारा है जिसको लेकर वे पिछले दिनों कहीं ना कहीं अपनी हार की टीस अपने समर्थकों के बीच निकालते ही रहे हैं उनके व्यंग्य के बाण उनके दौरे के दौरान चलते ही रहे हैं क्षेत्र से रायपुर जाकर मिलने वाले कार्यकर्ताओं से कभी कहते थे में चिरमिरी नहीं जाऊंगा इसी तरह की बातें मनेंद्रगढ़ के लिए भी उनके द्वारा कही जाती थी,स्थानीय नेताओं को हमेशा तिरछी निगाहें करके कह देते थे की तुमने हमारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया है जैसे-जैसे कई टिप्पणियां महंत जी के द्वारा कांग्रेसियों से की जाती रही हैं, इसी बीच एकाएक बड़ा परिवर्तन देखने को मिला छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष महंत जी का दोस्ताना व्यवहार लोगों में चर्चा का विषय बना हुआ है कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने नाम न छापने की शर्त पर जानकारी देते हुए बताया कि कुछ न कुछ तो महंत जी के मन में मनेंद्रगढ़ विधानसभा के लिए चल रहा है, पुत्र सूरज महंत के लिए विधानसभा में राजनीतिक उलटफेर किया जा सकता है।

इन दावेदारों का क्या?

सनद रहे कि इसी विधानसभा से प्रबल दावेदारी विधायक विनय जायसवाल के अलावा महंत जी के कट्टर समर्थक अधिवक्ता रमेश सिंह पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष राजकुमार केसरवानी, सुन्नू श्रीवास्तव, नगर पालिका अध्यक्ष प्रभा पटेल, महापौर कंचन जायसवाल पूर्व महापौर डमरु रेड्डी भी दावेदार दिख रहे हैं और वह अपने अपने स्तर में अपने क्षेत्रों में अपने अपने स्तर में जमकर मेहनत भी कर रहे हैं,यदि इस विधानसभा से सूरज चुनाव लड़ेंगे, तो क्या यह सब सूरज महन्त के पक्ष में काम करेंगे.? मिली जानकारी के अनुसार राजकुमार केशरवानी का युवक कांग्रेस चुनाव के दौरान से महंत जी के बीच दूरियां बढ़ी है महंत जी किसी बहुसंख्यक वर्ग के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान की बात कर रहे थे वही राजकुमार केशरवानी और उनके समर्थक अल्पसंख्यक वर्ग के हाफिज मेंमन के पक्ष में प्रचार-प्रसार कर उन्हें जीता भी दिया, राजकुमार केशरवानी का क्षेत्र में कद भी बड़ा है लेकिन महंत जी से थोड़ी दूरियां भी बड़ी थी हालांकि यह दूरियां कम की जाने की बात कही जा रही हैं लेकिन कहते हैं कि कांच में एक बार दरार आ जाने से उसमें लकीरें हमेशा खींची रहती हैं पूर्व महापौर डमरू रेड्डी कभी ऐसे ही कुछ हाल है उन्होंने चरणदास महंत की मंशा के विपरीत जाकर निर्दलीय चुनाव लड़ा था उनके चहेते प्रत्याशी मोहम्मद इमाम काफी बड़े अंतर से चुनाव हार गए थे जिसको लेकर महंत जी और डमरू रेड्डी में भी काफी दिनों तक दूरियां बढ़ी रही,दोनों पक्षों में दूरियां कम करने की कोशिशें की जा रही हैं प्रभा पटेल उनकी कट्टर समर्थक मानी जाती है वहीं सोनू श्रीवास्तव भी में उनके चाहते माने जाते हैं कंचन जायसवाल की राह अलग है महत्वकांक्षी भी है अपने पति विनय जयसवाल के पद चिन्हों पर सदैव चलना चाहती हैं, ये और उनके पति खुद भी कोरबा लोकसभा सीट के दावे करते रहते हैं, यह कब किसका विरोध करेंगे और किसका समर्थन करेंगे समझ से परे हैं बाहर हाल स्थिति जो भी हो चुनावी शंखनाद बज चुका है नेता अपने चहेतों के साथ अपने अपने क्षेत्र के नाराज कार्यकर्ताओं की मनाने की जुगत में भिड़ गए हैं कहीं वे सफल भी हो रहे हैं ज्यादातर मामलों में उन्हें असफलता ही अभी तक हाथ लगी है देखना यह है कि कौन नेता कितना सफल हो पाता है।

युवा कांग्रेस नेता का यह कैसा इस्तीफा,इस्तीफे के बाद भी कांग्रेस से नहीं हो रहा है मोह खत्म?

» लगातार कांग्रेस पार्टी के कार्यक्रमों में शिरकत करते चले आ रहें हैं निलेश पाण्डेय

» कांग्रेस के बड़े नेताओं के साथ फोटो खिंचवाकर सोशल मीडिया पर भी पोस्ट कर रहे निलेश पाण्डेय

» गत वर्ष ही पार्टी से दिया था इस्तीफा,राजनीति में नहीं रहने का लिया था संकल्प

- रवि सिंह -
बैकुण्ठपुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

युवा कांग्रेस नेता निलेश पाण्डेय ने दो साल पूर्व किसी कारणवश राजनीति से किनारा कर लिया था और कांग्रेस जिलाध्यक्ष को इस्तीफा पत्र सौंप कर कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता व सक्रिय राजनीति से किनारा कर लिया था लेकिन इसके बावजूद भी वह कांग्रेस से किनारा नहीं कर पा रहे हैं मोह ऐसा बना हुआ है कि लगातार पार्टी कार्यक्रमों में शिरकत करते हैं कांग्रेस के तमाम नेताओं के साथ फोटो खिंचवा कर यह बताते हैं कि अभी तो वह कांग्रेस में ही है।

निलेश पाण्डेय ने इस्तीफा क्यों दिया था इसबात का खुलासा उन्होंने उस समय भी नहीं किया था जब उन्होंने इस्तीफा दिया था लेकिन उन्होंने राजनीति में नहीं रहने का फैसला लिया था। अब जब वह लगातार फिर से राजनीति में सक्रिय नजर आ रहे हैं तो माना जा रहा है की वह राजनीति से किनारा कर पाने में खुद में ही असमर्थ साबित हुए और राजनीति की चमक धमक में ही उनका मन लगता है जिसकी वजह से वह राजनीति में ही रहने वाले हैं। युवा नेता निलेश पाण्डेय उन युवा नेताओं में से एक माने जाते हैं जो अपनी वाकपटुता की वजह से बड़े बड़े राजनीतिक व्यक्तियों का राजनीतिज्ञों का मन मोह लेते हैं और उन्हे अपने वश में कर लेते हैं। निलेश पाण्डेय ने वैसे तो कांग्रेस से अपनी राजनीति शुरू की थी लेकिन उनकी भाजपा में भी अच्छी पकड़ है और वह भाजपा नेताओं के बीच भी खासे लोकप्रिय हैं जैसा बताया भी जाता है और देखा भी जाता है,कुलमिलाकर नीलेश पाण्डेय अपनी राजनीतिक पारी में सभी से सामंजस्य भी बनाने में माहिर हैं और यही एक वजह भी है की वह सफल हैं। अब देखना यह है की उन्होंने अपना दिया हुआ इस्तीफा कब वापस लेने का मन बनाया है और वह कब फिर से खुलकर राजनीति में सामने आते हैं।

कम उम्र में सफलता प्राप्त कर रहे युवा नेता से वरिष्ठ कांग्रेसियों की दूरी बनी कारण...सूत्र

युवा कांग्रेस नेता ने कोरिया जिला कांग्रेस के समस्त पदों से दिया इस्तीफा

परिवारिक कारण वश इस्तीफा लिखकर छुपा गए अपनी ही व्यथा

पहाड़ी कोरवा विफनाथ ने तीरंदाजी में मारी बाजी

अम्बिकापुर, 14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

मैनपाट महोत्सव में आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा विषेष पिछड़ी जनजाति के लोगों के बीच मंगलवार को एकलव्य आवासीय विद्यालय मैनपाट के मैदान में तीरंदाजी स्पर्धा का आयोजन किया गया। लक्ष्य पर सटीक निषाना साधते हुए मैनपाट के पहाड़ी कोरवा विफनाथ ने तीरंदाजी स्पर्धा का विजेता बना। द्वितीय पर बिरना एवं तृतीय रामसिंह रहे।

विषेष पिछड़ी जनजाति तीरंदाजी प्रतियोगिता में मैनपाट, बतौली, सीतापुर एवं लुण्ड्रा के विषेष पिछड़ी जनजाति वर्ग के करीब 106 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और तीरंदाजी में जौहर दिखाया।

इस अवसर पर सहायक आयुक्त आदिवासी विकास श्री जेआर नागवंषी, अनुसंधान अधिकारी श्री डीपी नागेष सहित अन्य अधिकारी एवं बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

कांग्रेस का हाथ से हाथ जोड़ो पदयात्रा अभियान बैकोना पहुँचा

- संवाददाता -
प्रतापपुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

कांग्रेस का हाथ से हाथ जोड़ो पदयात्रा अभियान प्रतापपुर के ग्राम पंचायत खजुरी और बैकोना पहुँचा।ब्लॉक के विभिन्न नेताओं ने यहां ग्रामीणों को भाजपा की केंद्र सरकार के खिलाफ जागरूक करते हुए अगले लोकसभा चुनाव में उन्हें सबक सिखाने का आव्हान किया।

कांग्रेस की पूरे देश में 26 जनवरी से शुरू हुई हाथ से हाथ जोड़ो पद यात्रा की शुरुआत प्रतापपुर विकासखण्ड में ब्लॉक अध्यक्ष कुमार सिंह द्वारा 27 जनवरी को दूरस्थ ग्राम गोरगी से की गई थी।दो हफ्तों में कांग्रेसियों की यह पद यात्रा कई ग्राम पंचायतों में पहुंच चुकी है,स्थानीय विद्यायक और मंत्री डॉ प्रेमसाय सिंह लोलकी में इस अभियान में शामिल हुए थे।ब्लॉक अध्यक्ष कुमार सिंह देव के साथ शक्कर कारखाना अध्यक्ष विद्यासागर सिंह, उपाध्यक्ष जितेंद्र दुबे,नगर पंचायत जरही ने अध्यक्ष बीजू दासन,ब्लॉक कांग्रेस उपाध्यक्ष बनवारीलाल गुप्ता,सतीश चौबे जैसे स्थानीय बड़े नाम इसमें शामिल हो आम लोगों को केंद्र में भाजपा सरकार के खिलाफ जागरूक करने का प्रयास कर रहे हैं।कई ग्राम पंचायतों में पहुंच चुका यह अभियान रविवार को बैकोना और खजुरी पहुंचा।इस दौरान उपस्थित कांग्रेस के नेताओं ने ग्रामीणों के साथ इन पंचायतों के हर मोहल्ले में पदयात्रा की,वे लोगों से मिलते रहे और केंद्र में भाजपा सरकार के कारण देश में फैली अराजकता,महंगाई,नफरत व अन्य मुद्दों से अवगत कराया।इस दौरान ब्लॉक अध्यक्ष कुमार सिंह देव ने कहा कि केंद्र में मोदी सरकार की अक्षमता, जन-विरोधी नीतियाँ, विभाजनकारी और विनाशकारी राजनीति के कारण देश में गंभीर बेरोजगारी, महंगाई, वित्तीय संकट है,देश में आर्थिक बर्बादी की स्थिति निर्मित हो गई है।उन्होंने कहा कि देश राजनेता नहीं बल्कि उद्योगपति चला रहे हैं,समय आ गया है कि इस विकट स्थिति से देश को बचाने हम सब एकजुट हों और केंद्र की भाजपा सरकार को सबक सिखाते हुए उखाड़ फेंके।शक्कर कारखाना उपाध्यक्ष जितेंद्र दुबे ने कहा कि जब देश में कांग्रेस की सरकार थी,हर तरफ प्यार मोहब्बत था।सभी धर्म जाति के लोग मिल जुलकर रहते थे लेकिन अब नफरत हो नफरत है जिसका कारण भाजपा की केंद्र सरकार है।हमारी सरकार में देश विकास के पहियों ओर दौड़ता था लेकिन अब विकास नाम की कोई चीज दिखाई नहीं देती,केंद्र में बैठी भाजपा की सरकार केवल उद्योगपतियों तथा अपने करीबियों का विकास कर रही है।उन्होंने ग्रामीणों से कहा कि देश में फिर से अमन चैन हो,बेरोजगारी दूर हो,सभी को आपस में जोड़ने की नीति पर काम हो इसलिए जरूरी है कि फिर से केंद्र में कांग्रेस की आपकी अपनी सरकार बने।उन्होंने केंद्र में भाजपा सरकार के आठ साल के गलत निर्णयों और कार्यो की जानकारी दी तथा छत्तीसगढ़ सरकार के जनहित के कार्यों का भी बखान किया।इस दौरान बनवारी लाल गुप्ता,सतीश चौबे, सेक्टर प्रभारी करीमन पैकरा, ग्राम पंचायत शिवपुर के सरपंच देव शरण, बैकोना के सरपंच राजेंद्र, ग्राम पंचायत खजुरी के पूर्व सरपंच रामकिशन, बुधराम पैकरा, बल्लाराम, गोपाल राम, बासु राम, युवक कांग्रेस के मुमसाद खान,वसीम इराकी,प्रणव दुबे सहित अन्य उपस्थित थे।

कई विकास कार्यों का भूमिपूजन...

लहाथ से हाथ जोड़ो यात्रा अभियान के दौरान विभिन्न विकास कार्यों की सौगात भी दी गई।बैकोना में 14 लाख की लागत से बनने वाले सीसी सड़क,चार लाख की लागत की नाली, दो लाख की लागत से लगने वाले स्ट्रीट लाइट कार्यों का भूमि पूजन किया गया।यहां के साथ खजुरी में 14 लाख के सीसी सड़क और 4 लाख की नाली के निर्माण कार्य का भूमि पूजन किया गया।

रामदेव जगते ने दोनों जनपद को मिलाकर कांग्रेस का संगठन जिला बनाने का किया कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम के मांग

- संवाददाता -
प्रतापपुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

प्रतापपुर विधानसभा के पूर्व यूथ कांग्रेस अध्यक्ष व वर्तमान आदिवासी कांग्रेस जिला बलरामपुर के उपाध्यक्ष रामदेव जगते ने प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम को एक पत्र सौंपकर प्रतापपुर और वाड्रफनगर मिलाकर कांग्रेस का नया संगठन जिला बनाने का मांग किया है पत्र में उन्होंने लिखा है कि प्रतापपुर विधानसभा में दो ब्लॉक वाड्रफनगर, प्रतापपुर, एक संगठन ब्लॉक रघुनाथनगर एवं तीन नगरीय क्षेत्र नगर पंचायत वाड्रफनगर, प्रतापपुर, जरही है । ब्लॉक प्रतापपुर का जिला सूरजपुर एवं ब्लॉक वाड्रफनगर संगठन ब्लॉक रघुनाथनगर का जिला बलरामपुर-रामानुजगंज है ।

संगठनात्मक रूप से ब्लॉक वाड्रफनगर के कांग्रेस कार्यकर्ता एवं विधानसभा स्तर के पदेन एवं पूर्व गणमान्य पदाधिकारी को जिला कांग्रेस कमेटी सूरजपुर के कार्यक्रम व बैठक में आमंत्रित नहीं किया जाता है एवं ब्लॉक प्रतापपुर के कार्यकर्ता एवं विधानसभा स्तर के पदेन पदाधिकारी को जिला कांग्रेस कमेटी बलरामपुर के कार्यक्रम के बैठक में आमंत्रित नहीं किया जाता । अगर कोई भी कार्यकर्ता या वरिष्ठ पदाधिकारी कार्यक्रम या बैठक में गया तो उसे सम्बोधन करने का अवसर व उचित सम्मान नहीं मिल पाता है । कुछ समस्या एवं राय को सम्मेलन में रखना चाहता भी है तो उसे अपमानित किया जाता है कि आप दुसरे क्षेत्र व जिला के हो । जबकि विधानसभा एक है ।

प्रतापपुर विधानसभा के दावेदार प्रत्याशी का भी यह समस्या है कि ब्लॉक रघुनाथनगर, वाड्रफनगर क्षेत्र के दावेदार प्रत्याशी को प्रतापपुर ब्लॉक क्षेत्र के बैठक, कार्यक्रम व जिला कांग्रेस कमेटी सूरजपुर के कार्यक्रम व बैठक में सहभागी नहीं हो पा रहे हैं एवं प्रतापपुर क्षेत्र के दावेदार प्रत्याशीयों को वाड्रफनगर, रघुनाथनगर क्षेत्र के कार्यक्रम व जिला कांग्रेस कमेटी बलरामपुर के कार्यक्रम व बैठक में सहभागी नहीं हो पा रहे हैं न ही ब्लॉक व जिला की कमेटी एक दुसरे ब्लॉक व जिले में आमंत्रित किया जा रहा है । युवा कांग्रेस व एन.एस.यू.आई. तथा अन्य विधानसभा स्तर के संगठनों के पदाधिकारी व कार्यकर्ता, सदस्यों का भी समस्या है। समस्या कार्यकर्ता व पदाधिकारी के लिए गंभीर है जिस पर तत्काल चिंतन की आवश्यकता है ।

अब सामाजिक व्यवहार परिवर्तन संचार से सरगुजा में होगा विकास कार्यक्रमों का कायाकल्प

- संवाददाता -
अम्बिकापुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,अंबिकापुर में विद्यार्थियों ने एक ग्रुप वर्क से स्वयं में संभावित परिवर्तन की आकांक्षा और समाज के लिए अपने दायित्व पर खुलकर बात की। यह ग्रुप वर्क बिहेवियर क्लब स्थापित करने हेतु हुई एक कार्यशाला के दौरान की गई। छात्रों ने खुलकर अपनी आकांक्षा, अपेक्षा और समाज के विकास में अपनी भूमिका पर बात की।

शहर के राजीव गांधी शासकीय कॉलेज तथा अलायन्स फॉर बिहेवियर चेंज यूनिसेफ के तकनीकी मदद और मार्गदर्शन में चालित सामुदायिक मंच के संयुक्त तत्वाधान में सामाजिक व्यवहार परिवर्तन एवं संचार को लेकर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

सामाजिक व्यवहार परिवर्तन एवं संचार के सिद्धांत को सरकारी और गैर सरकारी विकास कार्यक्रमों में लागू करके उसकी गुणवत्ता बढ़ाने की दृष्टि में युवा वर्ग, एनजीओ कर्मी, मीडिया कर्मी और महिला समूह को एक मंच पर कार्य करने की दृष्टि से यह कार्यशाला आयोजित की गई। जिसमें पीजी कॉलेज के समाज कार्य के छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लेकर प्रजेंटेशन के माध्यम से व्यक्तिगत स्तर एवं सामाजिक स्तर पर अपनी सोच को प्रदर्शित किया। इस कार्यशाला में सभी प्रतिभागियों को सामाजिक व्यवहार परिवर्तन एवं संचार के सात चरणों को बताते हुए इसके अभ्यास पर विशेष जानकारी दी गई।

उक्त संचार की गहनता को बताते हुए अलायन्स के स्टेट नोडल हेड मनीष सिंह ने कहा कि आगामी वर्षों में इसी संचार को प्रमुखता से लागू किया जाना है। इसलिए आवश्यक है कि इस संचार की तकनीकि पहलुओं और गुणों को समझे। उन्होंने एनजीओ कर्मी को समस्याओं की पहचान और उसके समाधान पर जानकारी दी और उनकी राय जानी। स्टेट नोडल हेड सिंह ने कहा कि समाज में व्यवहार परिवर्तन पर काफी कार्य किये जाने की जरूरत है, जैसे छत्तीसगढ़ में संस्थागत प्रसव का आंकड़ा 85त्त है जबकि प्रसव पश्चात माता द्वारा पहले एक घण्टे में स्तनपान का आंकड़ा केवल 35त्त ही है। अब समझना यह है कि इसमें सरकार क्या कर सकती है। यहां पर हमें सभी स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है।

इसी क्रम में उन्होंने कॉलेजों में बिहेवियर क्लब से वहां के विद्यार्थियों को रु ब रू कराया । उन्होंने कहा कि यह क्लब पूर्णतः स्टूडेंट द्वारा चालित होगा। इससे आप में वह सभी परिवर्तन आएगा, जिसकी आवश्यकता आपको और समाज को है। कॉलेज के शिक्षक मार्गदर्शन की भूमिका में इस क्लब को मदद करेंगे। इस दौरान दोनों कॉलेज में दो-दो मेंटर का चुनाव करके उन्हे क्लब का कीट प्रदान किया गया।

राजीव गांधी कॉलेज में विद्यार्थियों ने एक ग्रुप वर्क से अपने स्वयं में संभावित परिवर्तन की आकांक्षा और समाज के लिए अपने दायित्व बोध की बात की। इस कॉलेज के प्राध्यापक अभिषेक दुबे ने सीएसबीवी कोर्स की व्यापक जानकारी दी।

कार्यक्रम में अतिथि की भूमिका में उपस्थित एबीपी न्यूज के पत्रकार अमितेश पांडे ने भी समाज में व्यवहार परिवर्तन को लेकर बात की, उन्होंने कहा कि बरसात में बिजली गिरने पर आज भी लोग पीड़ित को गोबर के कण्डे से ढकते हैं, सर्प दंश पर झाड़फूंक कराते हैं, यह सब समाज के व्यवहार में ऐसे स्थापित हो चुका है कि अभी भी इस व्यवहार में परिवर्तन की काफी आवश्यकता है। इसलिए जरूरी है कि सरकार तो जो कर रही है करें ही हम सब अपने स्तर पर व्यवहार परिवर्तन के विभिन्न पहलुओं पर लगातार चर्चा समाज में करते रहें, नियमित बातचीत और जागरूकता से ही व्यवहार परिवर्तन संभव है।

छत्तीसगढ़ अलायंस फ़ॉर बिहिवियर चेंज के सरगुजा संभाग प्रभारी मंगल पांडेय ने कार्यक्रम में छात्राओं से बात करते हुए स्वयं सेवक की भूमिका, समाज में उनकी जरूरत को लेकर चर्चा की और बताया कि सोशल वर्कर किसे कहा जाता है, उसमें क्या-क्या स्किल होने चाहिए, कैसे कार्य करना चाहिये, समाज की समस्या को कैसे चिन्हांकित कर उस पर कार्य योजना बता कर कार्य किया जाये, यह सोशल वर्क से जुड़े सभी छात्राओं को सीखना एवं पढ़ना, समझना होगा।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सरगुजा साइंस ग्रुप के अंचल ओझा ने सामाजिक समस्याओं के सभी क्षेत्रों में स्वयंसेवक की भूमिका पर विस्तार से छात्रों को बताया।

इस दौरान समाजसेवी वंदना दत्ता, स्नेहालय फाउंडेशन से ममोल कोचेटा, छत्तीसगढ़ प्रचार एवं विकास संस्थान से अनिल मिश्रा, साई कॉलेज से अजय तिवारी, मुस्लिम लोक सेवा समिति से सुल्ताना सिद्दीकी सहित काफी संख्या में एमएसडब्ल्यू के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

कोरिया जिले के शिल्पकार स्व डॉक्टर रामचंद्र सिंहदेव के जन्म जयंती अवसर पर भी एकजुट नहीं दिखे कांग्रेसी

कार्यक्रम में भीड़ अपेक्षाकृत अच्छी जुटी जो बैकुंठपुर विधायक के लिए रहा संतोष का विषय

ऐसे तो नहीं थे स्व. कोरिया कुमार

मंच पर मिली प्रभा पटेल को जगह

समर्थकों के साथ खड़ी कंचन जयसवाल

कई पदाधिकारी नहीं दिखे

- अनावरण वाले प्रतिमा में स्व. कुमार साहब की झलक नजर नहीं आ रही है:जनता
- स्कूली छात्र-छात्राओ से बढाई कार्यक्रम की शोभा व भीड़
- चिरमिरी महापौर कंचन जायसवाल को पैलेस के पीछे मंच पर नही बुलाया गया
- मनेंद्रगढ नगरपालिका अध्यक्ष को वापिस बुलाकर मंच पर दी गई जगह

मंच के निचे प्रभा पटेल

छत्र की भीड़

रामानुज स्कूल के छत्र पैलेस ग्राउंड जाते हुए

- रवि सिंह -
बैकुण्ठपुर 14 फरवरी 2023
(घटती-घटना)।

कोरिया जिले के शिल्पकार कोरिया जिले के जनक स्व डॉक्टर रामचंद्र सिंहदेव के जन्म जयंती अवसर पर भी कोरिया जिले के खासकर अविभाजित कोरिया जिले के कांग्रेसी नेता एकजुट नहीं दिखे। प्रदेश के मुख्यमंत्री साथ ही कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठजनों की उपस्थिति में कोरिया जिला मुख्यालय में आयोजित स्व डॉक्टर रामचंद्र सिंहदेव के 92 वें जन्म जयंती अवसर पर जिले में जो एकजुटता कांग्रेसियों में देखी जानी थी वह नहीं देखी गई बशर्ते यह केवल बैकुंठपुर विधायक की तरफ से अपना शक्ति प्रदर्शन मात्र साबित हुआ यह कहना गलत नहीं होगा साथ ही पूरे आयोजन में सत्ताधारी दल बिखरी हुई नजर आई और जो चुनावी वर्ष में कांग्रेस के लिए अच्छा संकेत बिल्कुल नहीं माना जा सकता। कार्यक्रम में भीड़ अपेक्षाकृत अच्छी जुटी जो बैकुंठपुर विधायक के लिए संतोष का विषय भले हो लेकिन यदि भीड़ जुटाई गई थी तो उनके लिए भी यह पूरा आयोजन किसी मायने का नहीं साबित हुआ कहा जा सकता है। स्व डॉक्टर रामचंद्र सिंहदेव सादगी पसंद जीवन जीने वाले व्यक्तित्व भले थे लेकिन उनके जाते ही उनके नाम की ललक जिस कदर सत्ताधारी दल के नेताओ में देखी गई वह भी अजीब रही और उनके नाम से ही बैकुंठपुर जिला मुख्यालय का पुराना घड़ी चौक अब जाना जाएगा जो अब तक पहले कई बार अपनी नाम और पहचान बदल चुका है।

ऐसे नहीं दिखते थे कुमार साहब

चौक पर कुमार साहब की आदमकद प्रतिमा लगाई गई है जिसका भले ही अनावरण किया गया है लेकिन प्रतिमा देखने के बाद लोगो ने प्रतिक्रया भी दी है, प्रतिमा देखकर लोगो का यही कहना है कि कुमार साहब ऐसे नहीं दिखा करते थे। उनकी प्रतिमा में स्व. कुमार साहब की झलक नजर नहीं आ रही है यह लोगों का कहना है।

स्कूली छात्र-छात्राओं ने बढाई कार्यक्रम की शोभा

मुख्यमंत्री के द्वारा प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम में जब स्व कोरिया कुमार चौक में तय समय तक तक भीड़ इकट्ठा नहीं हुई थी तो उसी दौरान पास ही मौजूद आदर्श कन्या उमावि की छात्राओं को उनकी कक्षा बंद कराकर कार्यक्रम स्थल तक लाया गया था,छात्राओं को काफी देर पहले लाकर घंटे भर तेज धूप में बैठाया गया,भूखे प्यासे बैठी इन छात्राओं को कार्यक्रम समाप्ति के बाद भेजा गया। तों वहीं कोरिया पैलेस के पीछे कार्यक्रम स्थल पर भी काफी कम भीड़ देखने को मिली,मुख्यमंत्री के आने का समय हो चुका था लिहाजा रामानुज हायर सेकेंड्री स्कूल के छात्रों को रैली की शक्ल में कार्यक्रम स्थल ले जाया गया। उल्लेखनीय है कि ऐसे किसी भी आयोजन में स्कूली छात्र-छात्राओं को शामिल करने में स्पष्ट मनाही है उसके बावजूद छात्रों को शामिल किया गया,छात्रों को संस्था प्रमुख ने किसके आदेश से वहां भेजा यह सवालिया निशान है,लेकिन छात्रों को लाकर भीड़ दिखलाना सहज ही बतलाता है कि उक्त आयोजन में आमजन की दिलचस्पी नहीं थी जिससे कि छात्रों को लाना पड़ा।

चिरमिरी मेयर को मंच पर जगह नहीं मिली

कार्यक्रम में चिरमिरी महापौर कंचन जायसवाल भी उपस्थित रहीं,पैलेस के पीछे उन्हे मंच पर नहीं बुलाया गया,और न ही कोई सम्मान दिया गया,जिससे कि वे आमजन की तरह ही सादगी का परिचय देते हुए मुख्यमंत्री का उद्बोधन सुनने खड़ी रहीं उन्हें खड़ा देख लोगो में चर्चा का विषय बना रहा उनके साथ सभापति गायत्री बिरहा को भी मंच पर स्थान नहीं मिल सका। चिरमिरी से ही कांग्रेस नेत्री बबिता सिंह को मंच पर जगह दी गई थी। जबकि कई कनिष्ठ कार्यकर्ता मंच पर दिखाई दिए।

मनेंद्रगढ़ नगरपालिका अध्यक्ष को वापिस बुलाकर मंच पर दी गई जगह

कार्यक्रम स्थल पर मनेंद्रगढ नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रभा पटेल भी मौजूद रहीं पहले तो उन्हे मंच पर आमंत्रित नहीं किया जिससे कि वे मंच के करीब आकर भी जाने लगीं बाद में नाम लेकर बुलाने पर वे वापिस मंच में गईं, जिसके बाद उन्हें स्थान दिया गया उनके साथ सांसद प्रतिनिधि निर्मला चतुर्वेदी भी थीं। कई अन्य जनप्रतिनिधि भी कार्यक्रम स्थल के आसपास ईधर उधर घूमते दिखाई दिए जो कि चर्चा का विषय बना रहा।

कई कांग्रेसी दूर दिखे

मुख्यमंत्री का कोरिया जिला मुख्यालय दौरा इस बार चर्चा का विषय बन गया,वे अपने साथ हेलीकाप्टर में स्वास्थ्य मंत्री टीएस सिंहदेव को साथ लेकर पहुंचे तो आमंत्रण के बाद भी खाद्य मंत्री अमरजीत भगत और प्रभारी मंत्री शिव डहरिया का ना आना भी चर्चा का विषय बना रहा। संगठन के कई पदाधिकारी कुमार साहब की प्रतिमा के अनावरण के वक्त तो मौजूद थे लेकिन पैलेस के पीछे आयोजित कार्यक्रम में शामिल नहीं हुये। विधायक अंबिका सिंहदेव पदाधिकारियों और कभी अपने खास रहे कई कार्यकर्ताओं से दूरी बनाते हुए दिखाई दीं। प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम प्रशासनिक था वहां पर श्रीमती सिंहदेव ज्यादा समय मौजूद नहीं थी,हेलीपेड से सीएम के साथ आकर अनावरण के बाद साथ हीं पैलेस मैदान गईं इस बीच पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं से उनकी काफी दूरी देखी गई।

चर्चा थी 35000 लोगों के भोजन की लेकिन आधे भी नहीं आये

कार्यक्रम के पूर्व विधायक अंबिका सिंहदेव समर्थकों द्वारा कोरिया पैलेस के पीछे कार्यक्रम स्थल पर 35000 लोगो को भोजन कराने की बात कही जा रही थी लेकिन प्रत्यक्षदर्शियों की माने तो वहां इसकी आधी भी भीड़ नही आई थी, प्रशासन पर दबाव डालकर सचिवों के माध्यम से भीड़ जुटाने की कोशिश भी नाकाम ही साबित हुई। लगभग 12000-14000 लोगो के कार्यक्रम में शामिल होने की खबर है।

भरतपुर सोनहत विधायक सहित मनेंद्रगढ़ के कांग्रेस नेताओं ने निजी होटल में किया भोजन

जहां एक तरफ 35 हजार लोगों के भोजन की व्यवस्था की गई थी वहीं भरतपुर सोनहत सहित मनेंद्रगढ़ विधानसभा से पहुंचे विधायक सहित कांग्रेस नेताओं को निजी होटल में भोजन करते देखा गया। कई निकाय के अध्यक्ष महापौर सहित विधायक भी निजी होटल में भोजन कर अपने समर्थकों के साथ वापस लौटे।यह देखकर यह साबित हुआ की एकजुटता कांग्रेस पार्टी की धरासाई हो चुकी है।

जिला प्रशासन ने भी एमसीबी जिले के जनप्रतिनिधियों का नहीं रखा ध्यान

कोरिया जिले में आयोजित स्व डॉक्टर रामचंद्र सिंहदेव जन्म जयंती आयोजन में एमसीबी जिले से पहुंचे जनप्रतिनिधियों का कोरिया जिला प्रशासन ने भी ख्याल नहीं रखा। एक तरफ जहां हजारों लोगों के भोजन की व्यवस्था संसदीय सचिव बैकुंठपुर विधायक की तरफ से किया गया था वहीं एमसीबी जिले के जनप्रतिनिधियों के लिए भोजन की व्यवस्था नहीं की गई थी जबकि जिला प्रशासन को जनप्रतिनिधियों के लिए भोजन की व्यवस्था करनी चाहिए थी। राज्यमंत्री दर्जा प्राप्त दो विधायक एक महापौर सहित कई नगरपालिका अध्यक्ष एवम उनके समर्थकों को निजी होटल में भोजन करना पड़ा जिससे यह साबित हुआ की उनके लिए जिला प्रशासन ने कोई व्यवस्था नहीं की थी जबकि उनके लिए विश्राम भवन में व्यवस्था की जानी चाहिए थी।

संभागीय राजभाषा आयोग द्वारा कोयलांचल की कवियित्रों का हुआ सम्मान

- संवाददाता -
चिरमिरी, 14 फरवरी 2023
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग द्वारा सरगुजा संभाग राजभाषा सम्मेलन व सम्मान समारोह का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में कोयलांचल क्षेत्र के कवि एवं कवियित्रियों ने भी अपने प्रतिभा का जौहर दिखाते हुए, अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। खाद्य एवं संस्कृति मंत्री अमरजीत भगत के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. प्रीतम राम, विधायक एवं अध्यक्ष छ.ग मेडिकल सर्विसेस कॉरपोरेशन के अध्यक्षता में आयोजित हुए इस कार्यक्रम में श्रम कल्याण मंडल अध्यक्ष शफी अहमद, बालकृष्ण पाठक अध्यक्ष पादप बोर्ड छ.ग शासन, खाद्य आयोग अध्यक्ष गुरप्रीत सिंह बाबरा, बीस सूत्रीय क्रियान्वयन समिति के उपाध्यक्ष अजय अग्रवाल, कमिश्नर सरगुजा संभाग संजय अलंग, तेलघानी विकास बोर्ड के सदस्य लक्ष्मी गुप्ता, अनु. जनजाति आयोग के अमृत टोप्पो, मदरसा बोर्ड से इरफान सिद्दीकी, सरगुजा कृषक कल्याण परिषद संजय गुप्ता, बीज प्रमाणीकरण के अरविंद गुप्ता, सरगुजा कलेक्टर कुन्दन कुमार, सचिव छ.ग राजभाषा आयोग डॉ. अनिल भतपहरी, जिला समन्यवक सरगुजा राजेश तिवारी, रंजीव सारथी एवं डॉ. सपन सिन्हा के सानिध्य में विराट सम्मेलन सम्पन्न हुआ। राजभाषा आयोग छ.ग के साहित्यिक सम्मेलन में एमसीबी चिरमिरी क्षेत्र से मल्लिका रुद्रा, मनेंद्रगढ़ से वीरांगना श्रीवास्तव, मंजुला कौरव, निर्मला महाजन एवं भोला प्रसाद मिश्रा ने काव्यपाठ किया एवं इन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

पूर्व विधायक श्याम बिहारी ने अमृतधारा व झुमका महोत्सव की तर्ज पर जगन्नाथ मंदिर चिरमिरी हिल्स महोत्सव का आयोजन करने की मांग प्रशासन से की

- संवाददाता -
चिरमिरी, 14 फरवरी 2023
(घटती-घटना)।

अमृतधारा व झुमका महोत्सव की तर्ज पर जगन्नाथ मंदिर चिरमिरी हिल्स महोत्सव का आयोजन करने की मांग जिला प्रशासन से पूर्व विधायक श्याम बिहारी जायसवाल ने की।

पूर्व विधायक श्याम बिहारी जायसवाल ने जिलाधीश एमसीबी को पत्र लिखते हुए मांग रखा है कि चिरमिरी क्षेत्र में स्थित भगवान श्री जगन्नाथ मंदिर में प्रतिवर्ष मेले का आयोजन भव्य रूप में किया जाता है। पूरे प्रदेश में एकमात्र जगन्नाथ पुरी की तर्ज पर भगवान जगन्नाथ का मंदिर बना हुआ है। भगवान जगन्नाथ जी का यह मंदिर पूरे प्रदेश ही नहीं वरन अन्य राज्यों के लोगों के बीच आस्था का केंद्र है। क्षेत्र के स्थानीयजनों की मांग रही है कि जिस तरह कोरिया व एमसीबी जिला प्राासन के द्वारा झुमका व अमृतधारा महोत्सव का आयोजन किया जाता है, उसी तर्ज पर श्री जगन्नाथ मंदिर चिरमिरी हिल्स महोत्सव का आयोजन जिला प्राासन द्वारा कराये जाने से चिरमिरी क्षेत्र को पर्यटन के नक्शे में एक अलग पहचना मिलने के साथ ही चिरमिरी के स्थायित्व के लिए भी एक मील का पत्थर साबित होगा। जिस हेतु श्री जायसवाल ने कलेक्टर एमसीबी से पत्र के माध्यम से जनभावनाओं और क्षेत्र के स्थायित्व के मद्देनजर यह मांग रखी है की श्री जगन्नाथ मंदिर चिरमिरी हिल्स का आयोजन जिला प्रशासन द्वारा कराया जाए।

क्या भाजपा कार्यालय की बिजली से चल रही जिलाध्यक्ष के पुत्र की चाय दुकान?

- आखिर अभी तक क्यों नही लिया गया नया बिजली कनेक्शन
- जिलाध्यक्ष की मनमानी से पदाधिकारियों में ही बढा असंतोष

-रवि सिंह-
बैकुण्ठपुर 14 फरवरी 2023
(घटती-घटना)।

कोरिया जिले में भारतीय जनता पार्टी का संगठन चला रहे भाजपा जिलाध्यक्ष ने मनमानी की चरम सीमा पार कर दी है, उनका कार्य व्यवहार और अन्य गतिविधियों को देखकर लग रहा है कि वास्तव में वे पार्टी को प्रायवेट लिमिटेड कंपनी की तरह चला रहे हैं। पहले भाजपा कार्यालय की गैलरी को अतिक्रमित करते हुए दुकान बनवाया गया फिर अन्य कार्यकर्ताओं को दूर करते हुए पुत्र को चाय दुकान खुलवाकर उस पर कब्जा किया गया, पद का ऐसा दुरूपयोग और दादागिरी कि न कोई किराया न कोई लागत, निःशुल्क दुकान पर कब्जा कर लिया। इन सब को लेकर जब खबर का प्रकाशन हुआ तो तमतमाकर पत्रकार के खिलाफ ही रिपोर्ट कर दिया,अवैध उगाही का आरोप तक लगा दिया गया। तो वहीं अब एक और नया मामला प्रकाश में आ रहा है जिसके अनुसार भाजपा कार्यालय में दुकान बनवाकर कब्जा कर भाजपा जिलाध्यक्ष ने चाय की दुकान तो खुलवा दी और उस पर जो बिजली उपयोग किया जा रहा है वह बिजली भी भाजपा कार्यालय से ही ली गई है ऐसा सूत्रों का कहना है। मतलब चाय दुकान का पूरा खर्च भाजपा कार्यालय पर ही डाल दिया गया है। जिलाध्यक्ष की इस प्रकार मनमानी से उनके खिलाफ पार्टी में जमकर आक्रोश देखा जा रहा है।

आखिर क्यों मनमर्जी पर ऊतारू हैं जिलाध्यक्ष?

भाजपा जिलाध्यक्ष कृष्णा बिहारी जायसवाल की पार्टी में मनमर्जी इस कदर बढ गई है कि आज अंदर ही अंदर भयंकर आक्रोश पनप चुका है,संगठन प्रभारी से लेकर अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों का दौरा भी आये दिन जिला मुख्यालय समेत अन्य क्षेत्रों मे हो रहा है लेकिन किसी को भी उनकी मनमर्जी नही दिखाई दे रही है। एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि पार्टी के जो भी वरिष्ठ नेता यहां प्रवास पर आते हैं उन्हे भाजपा जिलाध्यक्ष द्वारा जानबूझकर घेरकर रखा जाता है, पार्टी के अन्य किसी भी पदाधिकारी व कार्यकर्ता से जानबूझकर नही मिलने नही दिया जाता कि रूष्ठ पदाधिकारियों द्वारा इसकी शिकायत न कर दी जाए। आज पार्टी की वर्तमान अंदरूनी स्थिति इतनी बदतर हो गई है कि जिला मुख्यालय से लेकर हर मंडलो तक पार्टी में भयंकर आक्रोश व्याप्त है। जिलाध्यक्ष की मनमानी इसलिए भी चरम सीमा पर है कि उन पर अब किसी भी वरिष्ठ पदाधिकारी का नियंत्रण नही है,पूर्व मंत्री भैयालाल राजवाड़े को साथ लेकर जिलाध्यक्ष द्वारा पार्टी पर मनमानी की जा रही है।

दो महीने बाद भी नही लगा बिजली कनेक्शन

भाजपा जिलाध्यक्ष द्वारा दुकान कब्जा करने के बाद गत दिसंबर माह में चाय की दुकान खुलवाई गई है,दुकान खुले दो माह से ज्यादा का समय व्यतीत हो गया लेकिन सूत्रों ने बतलाया कि कार्यालय में अभी भी बिजली भाजपा कार्यालय से लेकर उपयोग की जा रही है, मतलब दुकान से बिजली तक सब कुछ निःशुल्क। एक सामान्य व्यक्ति भी यदि बिजली कनेक्शन के लिए आवेदकन करता है तो उसे एक सप्ताह के भीतर ही कनेक्शन मिल जाता है लेकिन भाजपा जिलाध्यक्ष के पुत्र की चाय दुकान में अभी तक बिजली कनेक्शन नही लगा यह आश्चर्यजनक है। भाजपा जिलाध्यक्ष की ऐसी मनमर्जी से अन्य पदाधिकारी व कार्यकर्ता सभी हैरान हैं लेकिन संगठन में बंधे होने के कारण कुछ बोलना नही चाहते। जिलाध्यक्ष भी आऊट ऑफ़ कंट्रोल हैं, उनके आगे अब कोरिया जिले में कोई ऐसा पदाधिकारी नजर नही आता जो कि प्रदेश स्तर पर इन सभी बातो को रख सके। उल्लेखनीय है कि पहले संयुक्त कोरिया जिले में कई नेता ऐसे थे जो कि संगठन में ऊपर तक पकड़ रखते थे, कोरिया के विभाजन के बाद एमसीबी जिले में चले गए इसलिए वर्तमान जिलाध्यक्ष की मनमर्जी चरम सीमा पर पहुंच गई है।

केशव चंद जेई बैकुंठपुर

इस संबंध में जब इनसे से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि इसकी जानकारी मुझे नहीं है पता करके बताता हूं पर खबर लिखने तक बता नहीं पाए।

सुने मकान में घूसकर छड़ चोरी करने वाले तीन आरोपी को हरदीबाजार पुलिस ने किया गिरफ्तार

- संवाददाता -
कोरबा,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

हरदीबाजार थाना अंतर्गत दिनांक 13.02.2023 को प्रार्थी देवेन्द्र कुमार राठौर पिता स्व. लक्ष्मीप्रसाद राठौर उम्र 41 वर्ष निवासी ग्राम हरदी बाजार थाना हरदी बाजार जिला कोरबा द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराया कि भांठापारा हरदीबाजार स्थित अपने घर में मकान बनाने के लिए सरिया 12 एमएम. का 05 बंडल, 08 एम.एम. एक बंडल कीमती करीबन 32,000 रूपये को रखे थे जिसे अज्ञात आरोपियों द्वारा चोरी कर ले गये है। प्रार्थी की रिपोर्ट पर अपराध क्रमांक 31/2023 धारा 457, 380 भादवि. कायम कर हालात से पुलिस अधीक्षक कोरबा उदय किरण (भा.पु.से.), अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोरबा अभिषेक वर्मा , नगर पुलिस अधीक्षक दर्री रोबिनसन गुड़िया को अवगत कराकर मार्गदर्शन प्राप्त करने पर मार्गदर्शन प्रदान करते हुए आरोपियों की त्वरित गिरफ्तारी हेतु निर्देशित किया गया। प्रकरण के माल मशरूका को बरामद करने एवं आरोपियों को गिरफ्तार करने हेतु थाना हरदीबाजार पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए आरोपियों का पता तलाश में जुट गये। प्रकरण की विवेचना के दौरान आज दिनांक 14.02.2023 को मुखबीर से पता चला कि तीन संदिग्ध आरोपी ग्राम भांठापारा हरदीबाजार में छड़ (सरिया) भेजने हेतु ग्राहक की तलाश कर रहे हैं द्ध सूचना पर तत्काल पुलिस पार्टी रवाना होकर घेराबंदी कर दबिश देकर आरोपी विजेन्द्र कुमार गोंड़ पिता सुकुल सिंह गोंड़ उम्र 22 वर्ष साकिन भांठापारा हरदीबाजार थाना हरदीबाजार , अजय कुमार मरकाम पिता मोहन सिंह मरकाम उम्र 21 वर्ष साकिन भांठापारा हरदीबाजार जिला कोरबा , लोरिक कुमार मरकाम पिता गंधीराम मरकाम उम्र 35 वर्ष साकिन भांठापारा हरदीबाजार थाना हरदीबाजार को अभिरक्षा में लेकर हिकमत अमली से पूछताछ करने पर दिनांक घटना को चोरी करना स्वीकार किये। आरोपियों से चोरी गये संपूर्ण मशरूका को बरामद कर जप्त किया गया है। आरोपियों को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय के आदेशानुसार न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

पाली महोत्सव में बॉलीवुड सिंगर पलक मुच्छल एवं सुपर स्टार अनुज शर्मा की सुरीली आवाज से सजेगी शाम

- संवाददाता -
कोरबा,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

महाशिवरात्रि के अवसर पर पाली महोत्सव का आयोजन पाली में 18 और 19 फरवरी को किया जाएगा। पाली महोत्सव में बॉलीवुड और छालीवुड के कलाकार सांस्कृतिक कार्यक्रमों से दर्शकों का मनोरंजन करेंगे। 18 फरवरी को पाली महोत्सव में इस बार बॉलीवुड सिंगर पलक मुच्छल की सुरीली आवाज से शाम सजेगी। सुरीली आवाज की धनी पलक मुच्छल बॉलीवुड की जाने माने गायिका है। उन्होंने आशिकी 2, बाहुबली, एमएस धोनी द अनटोल्ड स्टोरी एवं प्रेम रतन धन पायो जैसे सुपरहिट फिल्मों के अलावा बहुत से बॉलीवुड फिल्मों में अपनी आवाज से दर्शकों के बीच सुपरहिट सिंगर के रूप में प्रसिद्धि पाई है। इसी प्रकार 18 फरवरी को ही छत्तीसगढ़ के सुपर स्टार अनुज शर्मा भी अपने छत्तीसगढ़ी गानों से पाली महोत्सव में अपनी जलवा बिखेरेंगे।

स्वर्गीय केशवलाल मेहता स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ

- संवाददाता -
कोरबा,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

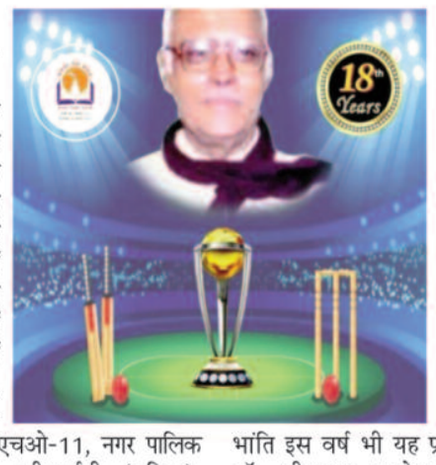

प्रेस क्लब कोरबा के तत्वाधान में स्वर्गीय केशवलाल मेहता टेनिस बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता का आगाज 14 फरवरी को घंटाघर मैदान निहारिका मैं हुआ आरंभ प्रतियोगिता के लीग मैच में कुल 16 टीमें भाग ले रही है जिसमें कलेक्टर-11, पुलिस-11, जिला पंचायत-11, बालको-11, एनटीपीसी-11, सीएमएचओ-11, नगर पालिक निगम-11, अधिवक्ता-11, सीएसईबी (पश्चिम), डीएसपीएम, एसईसीएल कोरबा, गेवरा,दीपका, कुसमुंडा, उद्यानिकी सहित कोरबा प्रेस क्लब की टीमें भाग ले रही है। इस प्रतियोगिता में विजेता व उपविजेता टीम को ट्राफी के अलावा विशेष पुरस्कार दिए जाएंगे ज्ञात हो कि कोरबा प्रेस क्लब के द्वारा जिले के वरिष्ठ पत्रकार रहे स्व. केशवलाल मेहता जी की स्मृति में विगत 17 वर्षों से क्रिकेट प्रतियोगिता का गरिमामय आयोजन किया जा रहा है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी यह प्रतियोगिता शाम 6 बजे से डॉ. भीमराव अम्बेडकर ओपन ऑडिटोरियम घंटाघर कोरबा में प्रारंभ हुआ ।

रेत घाट बंद होने के बावजूद धड़ल्ले से किया जा रहा रेत की अफरा-तफरी

- राजा मुखर्जी -
कोरबा,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

रेत घाट बंद होने के बावजूद कोरबा शहर में खुलेआम रेत का परिवहन किया जा रहा है । घाट बंद होने के बाद भी शासकीय और अशासकीय निर्माण के कार्य तेजी के साथ चल रहे हैं । जब शहर के अंदर रेत घाट बंद है तो, किस घाट से रेत

निकाल कर शहर के अंदर उसका परिवहन किया जा रहा है ? खनिज विभाग के अधिकारी का कहना है कि कुछ लोगों को रेत का भंडारण की अनुमति दी गई है जब रेत घाट बंद है तो रेत का परिवहन एवं रेत का भंडारण कैसे किया जा रहा है । इस विषय को लेकर संबंधित अधिकारी से पूछने पर उनका कहना है कि लगातार अवैध परिवहन पर कार्यवाही किया जा रहा है पर वह शहर के अंदर दिख नहीं रहा और जो कार्यवाही हो रहा है वह शहर के बाहरी क्षेत्रों में परिवहन करते की जा रही है । यह कि, कोरबा शहर के अंदर दिन भर रेत का अवैध उत्खनन एवं परिवहन किया जा रहा जो लोगों को तो दिख रहा पर संबंधित विभाग के अधिकारियों को शायद नहीं दिख रहा यद्ध देखना नहीं चाह रहे है जिससे कार्यवाही नहीं होने से रेत माफियाओं के हौसले दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं । नई रेत खदान के बारे में पूछे जाने पर जिला खनिज अधिकारी प्रमोद नायक ने कहा के ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायतों को पांच रेत खदान दे दिया गया है जबकि शहरी क्षेत्रों में जल्द नगर निगम को रेत खदानों का परिचालन करने के लिए दे दिया जाएगा, जिसके बाद ग्राम पंचायतों के द्वारा रेत का उत्खनन एवं नगर निगम क्षेत्र में निगम द्वारा रेत का उत्खनन कराया जाएगा द्ध अवैध रेत उत्खनन के सवाल पर उन्होंने कहा कि सूचना के आधार पर कार्यवाही की जा रही है अब देखना यह होगा की की यदि कार्यवाही हो रही है तो किस पर हो रही और वह कार्यवाही दिख क्यों नहीं रहा है ?

नियमितीकरण न कराने वालों के प्रति नगर निगम ने अख्तियार किया कड़ा रूख

- संवाददाता -
कोरबा,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

निगम आयुक्त प्रभाकर पाण्डेय के निर्देश पर अब निगम ने अनियमित विकास व निर्माण का नियमितीकरण न कराने वालों के प्रति कड़ा रूख अख्तियार किया हुआ है तथा मकान, दुकान को सील करने की कार्यवाही प्रारंभ कर दी है। इसी कड़ी में पं.रविशंकर शुक्लनगर, निहारिका, कोसाबाड़ी व पावर हाउस रोड कोरबा में 09 दुकानें सील कर दी गई हैं द्ध अब नियमितीकरण कराने पर ही इन दुकानों को खोला जाएगा। आयुक्त प्रभाकर पाण्डेय ने लोगों से अपील करते हुए कहा है कि वे अपने अनियमित निर्माण का नियमितीकरण अवश्य कराएं, शीघ्र से शीघ्र निगम में आवेदन दें तथा इस दिशा में की जाने वाली किसी भी प्रकार की कार्यवाही से होने वाली असुविधा से बचें। उल्लेखनीय है कि शासन ने अनियमित रूप से विकास व निर्माण करने वालों के हित में निर्णय लेते हुए अनियमित विकास के नियमितीकरण की योजना लागू की है। नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा इस दिशा में ठोस कार्यवाही करते हुए अनियमित रूप से किए गए मकानों, दुकानों, भवनों आदि के निर्माण के संबंध में सर्वेक्षण कराया गया तथा संबंधितों को नोटिस दी गई कि वे नियमितीकरण हेतु तत्काल अपने आवेदन प्रस्तुत करें तथा नियमितीकरण कराएं। निगम के अधिकारियों ने ऐसे अनियमित निर्माण करने वाले लोगों के घरों में दस्तक देकर उन्हें समझाईश भी दी तथा नियमितीकरण कराने के फायदों से उन्हें अवगत कराया किन्तु इसके बावजूद कतिपय लोगों द्वारा नियमितीकरण की दिशा में रूचि नहीं दिखाई गई और उनके द्वारा आवेदन प्रस्तुत नहीं किए गए। आयुक्त श्री प्रभाकर पाण्डेय के निर्देश पर निगम ने अब इस दिशा में कड़ा रूख अख्तियार करते हुए मकान, दुकान, भवनों आदि को सील करने की कार्यवाही प्रारंभ कर दी है। पं.रविशंकर शुक्लनगर में 05, निहारिका के पीछे स्थित 01 जिम को, कोसाबाड़ी में 01 तथा पावर हाउस रोड कोरबा में 01 दुकान, निहारिका रोड में स्थित महासेल की बेसमेंट शॉप की 01 दुकान को सील किया गया, अब इन दुकानों को सीलिंग से मुक्त तभी किया जाएगा, जब उनके द्वारा नियमितीकरण कराया जाएगा अन्यथा अवैध निर्माण मानकर उस पर कार्यवाही की जाएगी। निगम के अधिकारी कर्मचारियों द्वारा निगम के सभी जोनांतर्गत भ्रमण कर अनियमित निर्माण करने वालों को लगातार समझाईश व चेतावनी दी जा रही है कि वे नियमितीकरण हेतु जल्द से जल्द अपने आवेदन प्रस्तुत करें तथा अनियमित निर्माण का नियमितीकरण करा लें।

जनपद कोरबा के सीईओ होंगे विकास कुमार चौधरी

- संवाददाता -
कोरबा,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

कोरबा जनपद पंचायत में पिछले दिनों घटित हुए प्रशासनिक और राजनीतिक घटनाक्रम के बाद जहां जनपद उपाध्यक्ष श्रीमती कौशल्या देवी वैष्णव ने अविश्वास प्रस्ताव पारित होने से अपना उपाध्यक्ष पद गंवा बैठी, वही इससे पहले उनके द्वारा की गई वित्तीय अनियमितता संबंधी शिकायत पर जनपद सीईओ जीके मिश्रा और सहायक ग्रेड 2 सुरेश पांडेय के विरुद्ध गैर जमानती धारा के तहत अपराध पंजीबद्ध किया गया है। अपराध दर्ज होने के बाद से श्री मिश्रा एवं श्री पांडेय फरार चल रहे हैं।स्थानीय अदालत ने उनकी अग्रिम जमानत याचिका भी खारिज कर दी है। दूसरी ओर जनपद पंचायत में सीईओ के नहीं रहने से कामकाज प्रभावित हो रहा है। बिना पूर्व सूचना दिए अनाधिकृत रूप से अनुपस्थित रहने के कारण कलेक्टर संजीव कुमार झा ने आदेश जारी कर पाली जनपद पंचायत के सीईओ डिप्टी कलेक्टर विकास कुमार चौधरी को कोरबा जनपद पंचायत का संपूर्ण प्रभार सौंपा है। कटघोरा जनपद पंचायत के सीईओ वीके राठौर को पाली जनपद का अतिरिक्त प्रभार प्रदान किया गया है। इस संबंध में कलेक्टर ने आदेश जारी कर दिए हैं।

जनदर्शन में कलेक्टर ने 10 वर्षीय दिव्यांग प्रिंस को प्रदाय किया व्हीलचेयर

- संवाददाता -
सूरजपुर,14 फरवरी 2023

(घटती-घटना)।

जनदर्शन के माध्यम से आम जनता से कलेक्टर सुश्री इफ्फत आरा ने रूबरू होकर दूरस्थ क्षेत्रों से आए आम लोगों की समस्याओं और शिकायतों से संबंधित 82 आवेदनों को पूरी गंभीरता से सुना। उन्होंने विकासखंड ओड़गी ग्राम पकनी से आए दिव्यांग प्रिंस कुमार के परिजन के आवेदन का अवलोकन किया एवं समाज कल्याण विभाग को तत्काल कार्रवाई कर निराकरण करने के निर्देश दिए समाज कल्याण विभाग ने आवेदन पर तत्काल कार्रवाई किया।

कलेक्टर सुश्री इफ्फत आरा दिव्यांग प्रिंस कुमार को व्हीलचेयर प्रदाय किया। परिजन ने कलेक्टर एवं विभाग को धन्यवाद ज्ञापित किया।

आज जनदर्शन में वन अधिकार पत्र, आरबीसी 6-4, ऋण पुस्तिका, अनुकंपा नियुक्ति, राजस्व विभाग अंतर्गत सीमांकन, में नामांतरण, बटवारा, त्रुटि सुधार, जमीन विवाद जैसे आवेदन प्राप्त हुए उन्होंने राजस्व अमला को नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही कर निराकरण करने के निर्देश दिए है। सूरजपुर वार्ड क्रमांक 2 में संचालित शासकीय देशी-विदेशी मदिरा दुकान को अन्यत्र स्थानांतरित करने के लिए आवेदन प्राप्त हुए। उन्होंने पुलिस विभाग को गस्त लगाने के निर्देश दिए। जनदर्शन में राशन कार्ड, बेजा कब्जा, त्रुटि सुधार, मजदूरी भुगतान, नक्शा दुरुस्तीकरण, सड़क निर्माण, नामांतरण संशोधन, श्रमिक पंजीयन, फर्जी पट्टा निरस्तीकरण, जैसे आवेदन भी प्राप्त हुए। आवेदन का अवलोकन कर पात्रता अनुसार निराकरण करने निर्देशित किया।

इस दौरान डीएफओ श्री संजय यादव, जिला पंचायत सीईओ सुश्री लीना कोसम, संयुक्त कलेक्टर डॉ. प्रियंका वर्मा, एसडीएम श्री रवि सिंह, श्री सागर सिंह राज, श्री उत्तम रजक, श्रीमती दीपिका नेताम, एसपी कार्यालय डीएसपी श्रीमती नंदनी ठाकुर, डिप्टी कलेक्टर श्री नंदजी पांडे, एवं विभाग के समस्त अधिकारी उपस्थित थे।

स्वास्थ विभाग के सभी कर्मचारी, अधिकारी एक साथ एच्छिक अवकाश पर

- संवाददाता -

बैकुण्ठपुर,14 फरवरी 2023 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ प्रदेश स्वास्थ कर्मचारी संघ के विभिन्न मांगों को लेकर ब्लॉक बैकुंठपुर से सामुदायिक स्वास्थ केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और उप स्वास्थ केंद्र में पदस्थ सभी कर्मचारी अधिकारी अपनी मांगों को लेकर एकदिवसीय ऐच्छिक अवकाश पर रहेंगे।

ब्लॉक अध्यक्ष सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि प्रांतीय निकाय के आव्हान पर और जिला अध्यक्ष श्याम सुंदर जायसवाल के मार्गदर्शन पर हम सभी कर्मचारी अधिकारी एक दिन का ऐच्छिक अवकाश लेकर शासन का ध्यान अपनी विभिन्न मांगों की ओर आकर्षित करेंगे। इस ऐच्छिक अवकाश में चतुर्थ श्रेणी से लेकर तृतीय श्रेणी सभी अधिकारी कर्मचारी अवकाश पर रहेंगे। एक्छिक अवकाश में जाने से स्वास्थ व्यवस्था चरमरा जायेगी। जिससे हॉस्पिटल में इलाज करा रहे मरीजों और आने वाले ओपीडी मरीजों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। संघ के ब्लॉक अध्यक्ष सत्येंद्र सिंह के द्वारा आज सभी कर्मचारी अधिकारी के सामूहिक अवकाश पत्र को खंड चिकित्सा अधिकारी सीएचसी पटना डॉ बलवंत सिंह को ज्ञापन सौंपा गया, ज्ञापन के समय, प्रांतीय संगठन सचिव रामा शंकर साहू, ब्लॉक नर्सिंग अध्यक्ष कांछी मिंज,अनुराधा कुशवाहा, सचिव वीरेंद्र साहू,पंकज सिंह,दीपक पाण्डेय,संजय कुर्रे, प्रशांत गौतम उपस्थित रहे।

न्यायालय तहसीलदार नजूल अम्बिकापुर जिला-सरगुजा (छ0ग0)

रा.प्र.क्र./856 / अ-20(1)/2020-21

ईश्तहार

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ शासन राजस्व प्रबंधन विभाग,मंत्रालय,महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर के परिपत्र क्रमांक एफ 04-07/सात-01/2019 नवा रायपुर अटल नगर दिनांक 11/09/2019 के द्वारा जारी निर्देशानुसार छ0ग0 राजस्व पुस्तक परिपत्र के खण्ड 4(1) एवं 4(2) के अद्यतन संशोधित प्रावधानों के तहत आवेदिका ज्योति पति नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता निवासी नमनाकला, अम्बिकापुर तहसील अम्बिकापुर जिला सरगुजा के द्वारा नगर अम्बिकापुर के मोहल्ला/ग्राम नमनाकला,अम्बिकापुर स्थित शासकीय नजूल भूमि खसरा नम्बर 243/1 रकबा 39.04 एकड़ में से रकबा 152 वर्गमीटर भूमि पर मकान निर्माण कर अतिक्रमण किया गया है। उसके व्यवस्थापन/आबंटन बाबत आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है। जो इस न्यायालय में विचाराधीन है। उक्त संबंध में यदि किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से पेशी दिनांक 16/02/2023 तक न्यायालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। समय सीमा के बाद प्राप्त होने वाले आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 03/02/2023 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील — तहसीलदार नजूल अम्बिकापुर,सरगुजा(छ0ग0)

न्यायालय तहसीलदार नजूल, अम्बिकापुर जिला सरगुजा,छ.ग.

रा.प्र.क्र.855/अ-20(1)/2020-21

ईश्तहार

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है छत्तीसगढ़ शासन राजस्व प्रबंधन विभाग, मंत्रालय, महानदी भवन,नवा रायपुर अटल नगर के परिपत्र क्रमांक एफ 04-07/सात-01/2019 नवा रायपुर अटल नगर दिनांक 11/09/2019 के द्वारा जारी निर्देशानुसार छ0ग0 निर्देशानुसार छ0ग0 राजस्व पुस्तक परिपत्र के खण्ड 4/(1) एवं 4(2) के अद्यतन संशोधित प्रावधानों के तहत आवेदक योगेन्द्र आ0 गणेश साव निवासी नमनाकला, अम्बिकापुर तहसील अम्बिकापुर जिला सरगुजा के द्वारा नगर अम्बिकापुर के मोहल्ला/ग्राम नमनाकला, अम्बिकापुर स्थित शासकीय नजूल भूमि खसरा नम्बर 243/1 रकबा 39.04 एकड़ में से रकबा 140.19 वर्गमीटर भूमि पर मकान निर्माण कर अतिक्रमण किया गया है। उसके व्यवस्थापन/आबंटन बावत आवेदन पत्र इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया है। जो इस न्यायालय में विचाराधीन है। उक्त संबंध में यदि किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से पेशी दिनांक 16/02/2023 तक न्यायालय में उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। समय सीमा के बाद प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नही किया जावेंगा।

आज दिनांक 3/02/2023 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील — तहसीलदार नजूल अम्बिकापुर

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा0)रामानुजनगर, जिला सूरजपुर

रा.प्र.क्र./अ-2/2022-23

ईश्तहार

एतद द्वारा आम ग्रामीण जन ग्राम छिन्दिया को सूचित किया जाता है आवेदक कृष्णा आ0 विश्वनाथ जाति कवंर निवासी ग्राम छिन्दिया थाना व तहसील रामानुजनगर, जिला-सूरजपुर ने अपने स्वामित्व व अधिपत्य की कृषि भूमि स्थित ग्राम छिन्दिया प0ह0नं0 24 रा0नि0म0व तहसील रामानुजनगर जिला सूरजपुर स्थित भूमि खसरा नम्बर 1613/1 रकबा 0.030 हे0 भूमि को आवासीय प्रयोजन हेतु व्यपवर्तन किये जाने हेतु आवेदन पत्र के साथ शपथ पत्र,रजिस्ट्री की छायाप्रति,बी-1खसरा, नक्शा,सरगुजा सेटलमेंट रिनम्बरिंग सूची की छायाप्रति एवं ग्राम पंचायत छिन्दिया का अन्नापति प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतएवं उक्त संबंध में ग्राम छिन्दिया के किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वे स्वयं अथवा किसी विधि प्रतिनिधि के माध्यम से दिनांक 20/02/2023 को न्यायालयीन समयावधि में उपस्थित होकर दावा/आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। उसके पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 03/02/2023 को न्यायालयीन पदमुद्रा एवं मेरे हस्ताक्षर से जारी किया गया।

अनुविभागीय अधिकारी (रा0) रामानुजनगर जिला-सूरजपुर — सील

गिल चुने गये जनवरी के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

दुबई , 14 फरवरी 2023। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने भारत के प्रतिभावान सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल को जनवरी का सर्वश्रेष्ठ पुरुष खिलाड़ी आंका है। आईसीसी ने इसकी घोषणा की।

महिला क्रिकेटरों में जनवरी की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार इंग्लैंड की ग्रेस स्क्रिवन्स को दिया गया।

गिल ने अपने हमवतन मोहम्मद सिराज और न्यूजीलैंड के सलामी बल्लेबाज डेवन कॉनवे को हराकर यह सम्मान हासिल किया। गिल को चुनिंदा मीडिया प्रतिनिधियों, आईसीसी हॉल ऑफ फेमर्स, पूर्व खिलाड़ियों और प्रशंसकों द्वारा किये गये मतदान के आधार पर यह पुरस्कार दिया गया है।

गिल ने यह पुरस्कार मिलने पर कहा, मैं आईसीसी की ओर से महीने का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी पुरस्कार मिलने पर रोमांचित हूं। जनवरी मेरे लिये एक विशेष महीना था और यह पुरस्कार मिलना उसे और यादगार बना देता है। मेरी इस सफलता का श्रेय मेरी टीम के साथियों और कोचों को जाता है जो एक खिलाड़ी के रूप में हमेशा मेरा समर्थन करते हैं। मैं अपने साथ नामांकित खिलाड़ियों को भी उनके प्रदर्शन के लिये बधाई देता हूं।

गिल ने जनवरी में कुल चार शतक जमाये, जिसमें न्यूजीलैंड के विरुद्ध एकदिवसीय मैच में जड़ा गया दोहरा शतक भी शामिल रहा। श्रीलंका के

विरुद्ध एकदिवसीय सीरीज को 116 रन की शतकीय पारी के साथ समाप्त करने वाले गिल ने कीवी टीम के खिलाफ पहले ही वनडे में गेंदबाजी की धज्जियां उड़ाते हुए 149 गेंदों पर 19 चौकों और नौ छक्कों के साथ 208 रन बनाये। दूसरे वनडे में नाबाद 40 रन जोड़ने के बाद उन्होंने तीसरे एकदिवसीय मैच में भी 112 रन की शतकीय पारी खेली। गिल ने इस यादगार सीरीज की तीन पारियों में 360 रन बनाकर तीन मैचों की श्रृंखला में सर्वाधिक रन बनाने के मामले में बाबर आज़म की बराबरी कर ली।

उन्होंने कहा, अपने प्रदर्शन को पहचान मिलते हुए देखना हमेशा अच्छा लगता है। मैं इन पारियों से बहुत आत्मविश्वास लूंगा, खासकर घरेलू धरती पर होने वाले पुरुष क्रिकेट विश्व कप की ओर बढ़ते हुए।

एकदिवसीय सीरीज में अविश्वसनीय प्रदर्शन के बाद गिल न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले और दूसरे टी20 में प्रभावी प्रदर्शन नहीं कर सके, लेकिन तीसरे टी20 में उन्होंने 63 गेंदों पर 126 रन की विस्फोटक पारी खेल डाली। इसके साथ वह रोहित शर्मा, सुरेश रैना और विराट कोहली के बाद खेल के तीनों प्रारूपों में शतक जड़ने वाले चौथे भारतीय पुरुष क्रिकेटर बन गये।

जिम्बाब्वे के पूर्व क्रिकेटर और मतदाता दल के सदस्य पॉमी म्बंगवा ने कहा, बीता महीना शुभमन गिल की प्रतिभा की फिर से घोषणा कर रहा था। उनकी निस्तेज लालित्य और सुंदर शैली उनके अंडर-19 दिनों से ही स्पष्ट हो गयी हैान्यूजीलैंड के खिलाफ गिल का दोहरा शतक उन्हें एक विशिष्ट क्लब में रखता है और उनके करियर के उचित प्रस्थान का संकेत दे सकता है।

इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट से पहले न्यूज़ीलैंड को झटका

जैमीसन और हेनरी बाहर

वेलिंगटन , 14 फरवरी 2023। इंग्लैंड के खिलाफ गुरुवार से शुरू हो रही घरेलू टेस्ट श्रृंखला के पहले मैच में न्यूजीलैंड को तेज गेंदबाज काइल जैमीसन की सेवाएं नहीं मिलेंगी जो पीठ में 'स्ट्रेस फैक्चर' के कारण टीम से बाहर हो गये है। 'स्ट्रेस फैक्चर' आमतौर पर तब होता है किसी एक जगह की हड्डी पर लगातार दबाव बनता है। जैमीसन के साथी तेज गेंदबाज मैट हेनरी भी अपने पहले बच्चे के जन्म के लिए परिवार से साथ होने के कारण

चयन के लिए उपलब्ध नहीं है। इन दोनों की जगह नये गेंदबाज स्कॉट कुगलेइजन और जैकब डफी को टीम में शामिल किया गया है। जैमीसन पिछले साल जून से इस चोट के कारण टीम से बाहर चल रहे थे। वह पिछले सप्ताह दो दिवसीय अभ्यास मैच में न्यूजीलैंड एकादश के लिए मैदान पर उतरे थे लेकिन उनकी चोट फिर से उभर आयी। टीम ने मंगलवार को पुष्टि की कि वह माउंट माउंगानुई में खेले जाने वाले पहले टेस्ट में टीम का हिस्सा नहीं होंगे।

प्रियंका गोस्वामी,आकाशदीप सिंह ने ओलंपिक के लिए क्वॉलीफाई किया

रांची , 14 फरवरी 2023। टोक्यो ओलंपियन प्रियंका गोस्वामी और आकाशदीप सिंह ने मंगलवार को नेशनल ओपन रेस वॉकिंग चैंपियनशिप में क्रमशः महिला और पुरुष 20 किमी रेस वॉक में क्वालीफिकेशन पूरा करने के बाद पेरिस ओलंपिक 2024 और वर्ल्ड एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2023 के लिए क्वालीफाई किया। मोराबादी वॉक इवेंट में महिलाओं की 20 किमी स्पर्धा में, प्रियंका ने बुडापेस्ट और पेरिस ओलंपिक में एथलेटिक्स वर्ल्ड के लिए निर्धारित 1:29.20 सेकेंड के

क्वालीफाइंग मानक को पार करने के लिए 1:28:50 सेकेंड का समय लिया और शीर्ष स्थान हासिल किया। जबकि राष्ट्रमंडल खेलों की रजत पदक विजेता ने दो मार्की स्पर्धाओं में एक स्थान पक्का किया, लेकिन 1:28.45 सेकंड के साथ अपने ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड को तोड़ने के लिए पांच सेकंड से पीछे रह गईं।

एक अन्य टोक्यो ओलंपियन भावना जाट ने 1ः29.44 सेकंड के साथ रजत पदक जीता, लेकिन कोटा हासिल करने से चूक गईं। सोनल सुखवाल ने 1ः31.03 समय के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया।

पुरुषों की 20 किमी स्पर्धा में, अक्षदीप ने 1:19.55 सेकेंड का लिया और दोनों स्पर्धाओं में क्वालीफाई करने के लिए 1:20.10 क्वालिफिकेशन मार्क को पार किया। इस प्रक्रिया में, उन्होंने रांची में 2021 नेशनल रेस वॉकिंग चैंपियनशिप में संदीप कुमार द्वारा बनाए गए 1:20:16 के राष्ट्रीय रिकॉर्ड को तोड़ दिया।

दूसरी ओर, सूरज पंवार विश्व और पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने के करीब पहुंच गए, लेकिन 1:20.11 सेकेंड के समय के बाद 0.01 से चूक गए।

पीवी सिंधु ने कहाः मैं पूरी तरह से ठीक हूं

दुबई , 14 फरवरी 2023। दुबई में 14 फरवरी से बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैंपियनशिप 2023 का आयोजन शुरू हो गया है। इस टूर्नामेंट में भारतीय शटलर और ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधू भी हिस्सा ले रही है। पीवी सिंधू बीते लंबे समय से मैदान में बाहर थी मगर अब एशियन मिक्स्ड टीम चैंपियनशिप 2023 से पहले खुद सिंधू की तरफ से बड़ा बयान आया है।

भारतीय बैडमिंटन ऐस और ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु ने चोट के कारण लंबे समय तक जूझती रही थी। मगर अब उन्होंने खुद को पूरी तरह से फिट घोषित कर दिया है। उन्होंने कहा है कि फिट होने के बाद वो बैडमिंटन एशिया मिक्स्ड टीम चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए उत्सुक हैं। टूर्नामेंट का आयोजन 14 फरवरी से दुबई में हुआ।

बता दें कि पिछले साल, सिंधु ने सैयद मोदी इंटरनेशनल, स्विस ओपन और सिंगापुर ओपन खिताब जीता था। इस जीत के बाद टूर्नामेंट जीतने के संख्या के लिहाज से उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर सीजन बन गया। सिर्फ यही नहीं उन्होंने बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों 2022 में महिला एकल का स्वर्ण भी जीता। वर्ष 2022 में ये उनके करियर का पहला राष्ट्रमंडल खिताब था। हालांकि इस खिताब के बाद अगस्त 2022 में उनके बाएं पैर में एक स्ट्रैस प्रैक्चर आया था जिसके बाद वो बाकी सीजन के लिए बाहर हो गई थी। बता दें कि पीवी सिंधू वर्तमान में महिला एकल खिलाड़ियों की विश्व रैंकिंग में नौवें नंबर पर है।

पीवी जनवरी में मलेशिया ओपन में खेल में वापसी की, लेकिन वो कैरोलिना मारिन से हारने के बाद पहले दौर में बाहर हो गई थी। इसके बाद वो इंडिया ओपन में भी कमाल नहीं दिखा सकी थी। इंडिया ओपन में भी उन्हें शुरुआती दौर में ही बाहर होना पड़ा था। इसके बाद उन्होंने अपनी रिकवरी पर ध्यान देना जरुरी समझा और इंडोनेशिया और थाईलैंड मास्टर्स में हिस्सा नहीं लिया।

वहीं अब उन्होंने ऐलान किया है कि वो एशियन टूर्नामेंट में हिस्सा लेने के लिए पूरी तरह से तैयार है। उन्होंने कहा कि शारीरिक और मानसिक रूप से मैं पूरी तरह से तैयार हूं। चोट लग जाती है लेकिन अपने शरीर को स्वस्थ रखना और हर बार मजबूत होकर वापस आना महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि मैं मैं आश्वस्त हूं, सकारात्मक हूं और अपनी गलतियों से सीख रही हूं।÷

उन्होंने कहा कि अपने उस फॉर्म को दोबारा हासिल करने के लिए भी उत्सुक है, जिसमें वो पिछले साल थी जब उन्हें चोट लगी थी। हालांकि ये जाहिर है कि दोबारा फॉर्म में आने के लिए समय लगता है। फॉर्म दोबारा हासिल करने के लिए 100 प्रतिशत देना होगा मगर मैं अब पूरी तरह से ठीक हूं। दमदार लय में आने और टूर्नामेंट मैच खेलने में समय लगता है।

न्यूजीलैंड को हराकर दक्षिण अफ्रीका सेमीफाइनल की दौड़ में

पार्ल , 14 फरवरी 2023। क्लो ट्रायोन के हरफनमौला प्रदर्शन से मेजबान दक्षिण अफ्रीका ने महिला टी20 विश्व कप में न्यूजीलैंड पर 65 रन की बड़ी जीत से सेमीफाइनल में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को बरकरार रखा। ट्रायोन ने 34 गेंद में 40 रन की शानदार पारी खेली जिससे दक्षिण अफ्रीका शुरुआती झटकों से उबर

कर छह विकेट पर 132 रन का प्रतिस्पर्धी स्कोर खड़ा करने में सफल रहा। उन्होंने इसके बाद तीन ओवर में 12 रन देकर दो विकेट चटकाये। ट्रायोन को गेंदबाजी में नॉनकुलुलेको म्लाबा (4-0-10-3) का शानदार साथ मिला। बायें हाथ के इन स्पिन गेंदबाजों की फिरकी की सामने न्यूजीलैंड की टीम 67 रन पर आउट हो गयी।

इस जीत ने दक्षिण अफ्रीका के नेट रन रेट (1.550) में सुधार हुआ। टीम ग्रुप एक तालिका में श्रीलंका और ऑस्ट्रेलिया के बाद तीसरे स्थान पर पहुंच गयी। शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। लगातार दो हार झेलने के बाद न्यूजीलैंड तालिका में सबसे निचले पायदान पर है और टीम के लिए अंतिम-चार में पहुंचने की संभावना अब खत्म हो गयी है। दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला किया लेकिन न्यूजीलैंड को ऑफ स्पिनर ईडन कार्सन (23 रन पर दो विकेट) से गेंदबाजी की शुरुआत करने का फायदा हुआ। उन्होंने पहले ओवर में ही ताजमिन ब्रिट्स को एक रन पर पगबाधा कर दिया। मरीजान काप की नौ रन की पारी को लिया ताहुहू ने खत्म किया। सलामी बल्लेबाज लौरा वोल्वार्ड्ट और सुने लुस ने पावरप्ले ने कुछ अच्छे शॉट लगाये जिससे छह ओवर में दक्षिण अफ्रीका ने दो विकेट पर 44 रन बना लिये।

दिल्ली में खेले जाने वाले भारत ऑस्ट्रेलिया टेस्ट के सभी टिकट बिके

नई दिल्ली , 14 फरवरी 2023। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच शुक्रवार से यहां शुरू हो रहा बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी का दूसरा टेस्ट खचाखच भरे स्टेडियम में खेला जाएगा. दिल्ली दिसंबर 2017 के बाद पहली बार टेस्ट की मेजबानी कर रहा है.

भारतीय टीम ने नागपुर में खेले गये पहले टेस्ट मैच को तीन दिनों के अंदर जीतकर चार मैचों की श्रृंखला में 1-0 की बढ़त कायम कर ली है. डीडीसीए (दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ) के संयुक्त सचिव राजन मनचंदा ने मंगलवार को %पीटीआई-भाषा% से कहा, %%टिकट बिक चुके हैं और हम मैदान के खचाखच भरे रहने की उम्मीद कर रहे हैं. मैच को लेकर काफी दिलचस्पी है क्योंकि दिल्ली में लंबे समय बाद टेस्ट मैच खेला जा रहा है.

अरुण जेटली स्टेडियम में 40,000 दर्शकों के बैठने की क्षमता है. इस मैच के लिए 24,000 टिकट बिक्री के लिए रखे गए जबकि 8000 टिकट डीडीसीए सदस्यों के बीच वितरित किए गए, जो कि सामान्य है. शेष सीटों का उपयोग खेल में भाग लेने वाले गणमान्य व्यक्तियों के लिए किया जाएगा. मैच के दौरान सुरक्षा प्रदान करने वाले परिवारों के लिए स्टैंड का एक भाग आरक्षित है. नागपुर में श्रृंखला के पहले मैच के दौरान भी मैदान दर्शकों से भरा हुआ था.

जेमिमाह रोड्रिग्स और ऋचा घोष आईसीसी टी 20 ई रैंकिंग में आगे बढ़ीं

नई दिल्ली , 14 फरवरी 2023। भारत की जेमिमा रोड्रिग्स और ऋचा घोष मंगलवार को जारी आईसीसी महिला टी20ई खिलाड़ी रैंकिंग में बल्लेबाजों के बीच क्रमशः 11वें और 36वें स्थान पर पहुंच गई हैं।

महिला टी 20 विश्व कप के सलामी बल्लेबाज में पाकिस्तान के खिलाफ जीत के लिए भारत का मार्गदर्शन करने के बाद यह जोड़ी आगे बढ़ी।

रोड्रिग्स नाबाद 52 रन बनाकर 13वें से 11वें स्थान पर पहुंच गई हैं, वहीं घोष 31 रन की नाबाद पारी के बाद 42वें से 36वें स्थान पर पहुंच गई हैं।

उंगली की चोट के कारण सलामी बल्लेबाज से चूकने वाली उप-कप्तान स्मृति मंधाना तीसरे स्थान पर शीर्ष स्थान पर बनी हुई हैं। मंधाना की सलामी जोड़ीदार शेफाली वर्मा भी 10वें स्थान पर बरकरार हैं.

न्यूजीलैंड के खिलाफ एलिसा हीली की 55 रनों की पारी ने उन्हें दो पायदान ऊपर सातवें स्थान पर पहुंचा दिया है, जबकि श्रीलंका की चमारी अथापथु, जो टूर्नामेंट में अब तक 83 रनों के साथ सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी हैं, जिसमें दक्षिण अफ्रीका पर यादगार जीत में 68 रनों की मैच विनिंग पारी भी शामिल है। वह एक स्थान की बढ़त के साथ नौवें स्थान पर पहुंच गई हैं।

वेस्टइंडीज के कप्तान हेले मैथ्यूज (चार पायदान ऊपर 18वें स्थान पर), आयरलैंड के गैबी लेविस (दो पायदान ऊपर 22वें स्थान पर) और ऑस्ट्रेलिया के एलिसे पेरी (चार पायदान ऊपर 25वें स्थान पर) अन्य खिलाड़ी हैं जिन्हें इस अपडेट में

फायदा हुआ है, जो पहले सात में प्रदर्शन पर विचार करता है। महिला टी20 वर्ल्ड कप के मैच।

पाकिस्तान की कप्तान बिस्माह मारूफ नाबाद 68 रन बनाकर तीन स्थान आगे बढ़कर 30वें स्थान पर पहुंच गई हैं।

दक्षिण अफ्रीका के क्लो-ट्रायन (तीन पायदान ऊपर 37वें), इंग्लैंड की एलिस कैप्सी (13 पायदान ऊपर 38वें स्थान पर) और श्रीलंका की हर्षिता समरविक्रमा (नौ पायदान ऊपर 43वें स्थान पर) ने भी उल्लेखनीय प्रगति की है।

गेंदबाजी रैंकिंग में, इंग्लैंड के स्पिनर सोफी एक्लेस्टोन और दक्षिण अफ्रीका के नॉनकुलुलेको म्लाबा ने शीर्ष दो के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है। एक्लेस्टोन, जो छह विकेट के साथ टूर्नामेंट में अग्रणी विकेट लेने वाला है, 763 से 776 रेटिंग अंक पर पहुंच गया है, जबकि म्लाबा ने 17 रेटिंग अंक प्राप्त कर 770 रेटिंग अंक तक पहुंच गए हैं।

इस बीच, एशले गार्डनर न्यूजीलैंड के खिलाफ 12 रन देकर पांच विकेट लेने के लिए %प्लेयर ऑफ द मैच% पुरस्कार जीतने के बाद सात स्थान की छलांग लगाकर छठे स्थान पर पहुंच गई हैं।

वह इस प्रारूप में शीर्ष ऑलराउंडर बनी हुई हैं जबकि हेले मैथ्यूज और न्यूजीलैंड की अमेलिया केर एक-एक स्थान के फायदे से तीसरे और चौथे स्थान पर पहुंच गई हैं।इंग्लैंड की लेग स्पिनर सारा ग्लेन तीसरे स्थान पर पहुंच गई हैं जबकि श्रीलंका के पूर्व कप्तान इनोका राणावीरा 11 स्थान की छलांग लगाकर 10वें स्थान पर पहुंच गए हैं।

जूनियर एनटीआर की फिल्म के लिए जान्हवी के नाम पर लगी मोहर

जान्हवी कपूर पिछली बार फिल्म मिली में दिखी थीं। यह फिल्म भले ही बॉक्स ऑफिस पर न चली हो, लेकिन जान्हवी ने अपनी शानदार अदाकारी से दर्शकों का दिल जीत लिया। वह पिछले काफी समय से जूनियर एनटीआर की एक फिल्म को लेकर चर्चा में हैं। अब खबर है कि उन्हें इस फिल्म के लिए साइन कर लिया गया है। जान्हवी इससे जुड़कर बेहद उत्साहित हैं। फिल्म की शूटिंग से जुड़ी जानकारी भी सामने आई है। रिपोर्ट के मुताबिक, सुपरस्टार जूनियर एनटीआर की 30वीं फिल्म के लिए जान्हवी का नाम फाइनल हो गया है। इस फिल्म का निर्देशन दक्षिण भारतीय सिनेमा के जाने-माने निर्देशक कोराताला शिवा कर रहे हैं। वह पिछले छह महीने से इसके लिए लीड हीरोइन की तलाश कर रहे थे। कई नामों पर विचार करने के बाद अब आखिरकार उनकी यह खोज जान्हवी पर आकर खत्म हुई है। एनटीआर और जान्हवी के फोटोशूट के जरिए जल्द ही इस फिल्म का ऐलान किया जाएगा।

रक्तांचल फेम सौंदर्या शर्मा ने स्टाइलिश पोज देकर फ्लॉन्ट किया कर्वी फिगर

रक्तांचल और बिग बॉस सीजन 16 फेम एक्ट्रेस सौंदर्या शर्मा अपने ग्लैमरस अंदाज से फैंस पर कहर बरपाने का हुनर बखूबी जानती हैं। उनकी किलर तस्वीरें फैंस को काफी पसंद आती हैं। वहीं, ग्लैमर का तड़का लगाने के लिए सौंदर्या शर्मा बोल्डनेस और हॉटनेस का जलवा अक्सर दिखाती रहती हैं। सौंदर्या शर्मा स्कर्ट टॉप में काफी स्टनिंग लग रही हैं। उनकी तस्वीरें फैंस को काफी पसंद आ रही हैं। गोल्डन लुक में सौन्दर्या शर्मा अपना कर्वी फिगर फ्लॉन्ट कर रही हैं। उनकी बोल्ड तस्वीरें फैंस पर बिजलियां गिरा रही हैं। सौंदर्या शर्मा अपने बोल्ड आउटफिट से फैंस के दिलों को धड़काए हुए हैं। साथ ही फैंस उनकी तस्वीरों को खूब प्यार देते हैं। सौंदर्या शर्मा रियल लाइफ में बहुत ही बोल्ड और स्टाइलिश हैं। उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर धमाल मचाती हैं। सौंदर्या शर्मा अपनी हॉटनेस और दिलकश अदाओं के कारण हमेशा लाइमलाइट में रहती हैं। फैंस उनकी एक झलक के लिए बेताब रहते हैं। सौंदर्या शर्मा एक्ट्रेस होने के साथ पेशे से एक डेंटिस्ट भी हैं। साथ ही उन्होंने अपने एक्टिंग करियर को भी जारी रखा है। सौंदर्या शर्मा ने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत फिल्म रांची डायरी से की। इसमें उनके को एक्टर हिमांश कोहली रहे। वहीं, एक्ट्रेस फेमस ओटीटी वेब सीरीज रक्तांचल में भी नजर आ चुकी हैं। जिसमें उन्हें काफी नाम और फेम मिला।

शुरू हुई शहजादा की एडवांस बुकिंग,सामने आया नया पोस्टर

कार्तिक आर्यन की फिल्म शहजादा एक बार फिर चर्चा में आ गई हैं। इस फिल्म से जुड़ा एक नया पोस्टर सामने आया है। फिल्म से इस पोस्टर में कार्तिक आर्यन के साथ-साथ कृति सेनॉन भी नजर आ रही हैं। फिल्म के इस पोस्ट को कार्तिक आर्यन ने अपने इंस्टग्राम हैंडल से एक मजेदार कैप्शन के साथ शेयर किया है। कार्तिक आर्यन ने इस फिल्म के पोस्टर को शेयर करते हुए लिखा, बात जब शहजादा की हो तो डिस्कशन नहीं करते, सीधा टिकट बुक करते हैं। फिल्म के इस पोस्टर को कार्तिक आर्यन के फैंस काफी पसंद कर रहे हैं। इस पोस्टर में कार्तिक आर्यन और कृति का जो लुक नजर आ रहा है, वो एकदम अलग सा है।

कार्तिक आर्यन और कृति सेनॉन की फिल्म शहजादा 17 फरवरी को बड़े पर्दे पर रिलीज होने वाली है। इस फिल्म की एडवांस बुकिंग शनिवार यानी 11 फरवरी से शुरू हो गई है। हालांकि एडवांस को लेकर अभी ज्यादा जानकारी सामने नहीं आ पाई है। लेकिन बुक माइ शो पर देखने पर पता चलता है कि शहजादा को लेकर दर्शकों में अभी कोई जल्दबाजी नहीं है। इसके मुकाबले पठान की एडवांस अभी भी अच्छी संख्या में हो रही है। गौरतलब है किकार्तिक आर्यन की फिल्म शहजादा अल्लू अर्जुन की अला वैकुंठपुरमलो का आधिकारिक हिन्दी रीमेक है। इसके निर्माता अल्लू अरविंद हैं जिन्होंने मूल फिल्म का निर्माण किया था। यह वर्ष 2020 की ब्लॉकबस्टर फिल्मों में शामिल हुई थी। कार्तिक फिल्म में अल्लू अर्जुन की भूमिका निभा रहे हैं, वहीं कृति सेनन फिल्म में पूजा हेगड़े की भूमिका में नजर आएंगी।

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ से एयर इंडिया की हुई विदाई

रायपुर,14 फरवरी 2023 (ए)। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में करीब 40 साल से जारी एयर इंडिया का सफर आज खत्म हो गया। विमान कंपनी एयर इंडिया ने यहां से सामान समेट लिया है।

बता दें कि एयर इंडिया ने रायपुर से ऑनलाइन टिकटों की बुकिंग पहले ही बंद कर दी थी। एयर इंडिया के अधिग्रहण के बाद से ही रायपुर से पहले दिल्ली और अब मुंबई की उड़ानों को बंद कर दिया गया। बड़ी एयरलाइंस के बंद होने के बाद अब छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी एयरलाइंस इंडिगो एयरलाइंस हो गई है। आधे से ज्यादा उड़ानें इसी एयरलाइंस की ओर से संचालित की जा रही है।

इसके अलावा विस्तारा एयरलाइंस दिल्ली और मुंबई के लिए उड़ानों का संचालन कर रहा है। हालांकि एयर इंडिया की सेवाएं बंद हो जाने से विदेश जाने वाले यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

बीजापुर सीएमएचओ को राज्य सरकार ने किया सस्पेंड

निलंबित

बीजापुर ,14 फरवरी 2023 (ए)। बीजापुरसीएमएचओ को राज्य सरकार ने सस्पेंड कर दिया है। जिले ग्रामीण स्वास्थ्य संयोजक व संयोजिका के 16 पदों पर अवैध तरीके से नियुक्ति मामले पर बीजापुर सीएमएचओ पर निलंबन की गाज गिरी है। अवर सचिव ने जांच के बाद सीएमएचओ को सस्पेंड करने का आदेश दिया हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य संयोजक और संयोजिका की सीधी भर्ती में हुई अनियमितता की जांच कराई गई। जांच प्रतिवेदन में डॉ. सुनील भारती मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी बीजापुर द्वारा 6 ग्रामीण स्वास्थ्य संयोजिका(महिला) के पदों व 10 अन्य पदों पर प्रतीक्षा सूची से जारी नियुक्ति आदेश विधिक सम्मत नहीं हैं, क्योंकि ऐसे पद भविष्य में सीधी भर्ती से भरे जाने योग्य थे। इस अवैधानिक कृत्य के लिए डॉ. सुनील भारती पूरी तरह से जवाबदेह हैं तथा यह छत्तीसगढ़ सिविल सेवा आचरण नियम का स्पष्ट उल्लंघन हैं। डॉ. सुनील भारती को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया हैं। निलंबन अवधि में डॉ. भारती का मुख्यालय संभागीय संयुक्त संचालक कार्यालय जगदलपुर निर्धारित किया गया है। निलंबन अवधि में उन्हें जीवन निर्वाह भत्ता की पात्रता होगी। यह आदेश अवर सचिव राजेन्द्र सिंह गौर ने जारी किए हैं।

22 फरवरी को लेंगे नए राज्यपाल अपने पद की शपथ

शुरू हुई जोर-शोर से तैयारियां

रायपुर,14 फरवरी 2023 (ए)। देशभर के कई राज्यों के राज्यपालों का तबादला हुआ था, जिसमें छत्तीसगढ़ की राज्यपाल अनुसुईया उईके भी शामिल हैं. उनकी जगह नए राज्यपाल की जिम्मेदारी बिस्वा भूषण हरिचंदन को सौंपी गई है. अब राज्यपाल के शपथ ग्रहण की तैयारियां तेज हो गई है. बताया जा रहा है कि तारीख फिक्स हो गई है.

मिली जानकारी के मुताबिक छत्तीसगढ़ के नए राज्यपाल बिस्वा भूषण हरिचंदन अनुसुईया उईके की जगह 22 फरवरी को शपथ लेंगे।. शपथ ग्रहण को लेकर राजभवन में प्रारंभित तैयारियां शुरू हो गई हैं.

कौन है विश्व भूषण हरिचंदन ?

बिस्वा भूषण हरिचंदन के राजनीतिक सफर की बात करें तो उन्होंने 1971 में भारतीय जनसंघ में शामिल होकर अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की थी. राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य बने और जनता पार्टी बनने तक वो राज्य महासचिव से पद पर रहे. आपातकाल के दौरान उन्हें मीसा अधिनियम के तहत हिरासत में लिया गया था.

बता दें कि छत्तीसगढ़ की राज्यपाल अनुसुइया उइके की जगह आंध्र प्रदेश के राज्यपाल बिस्वा भूषण हरिचंदन को यहां की कमान सौंपी गई है. 88 वर्षीय बिस्वा भूषण हरिचंदन ओडिशा में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं में से एक हैं.

वह ओडिशा की भुवनेश्वर और चिल्का विधानसभा का प्रतिनिधित्व करते हुए 5 बार विधायक रह चुके हैं. 1980 से 88 के दौरान वे 8 साल तक बीजेपी की ओडिशा इकाई के अध्यक्ष भी रहे. 2004 में वह राज्य की बीजद-भाजपा सरकार में मंत्री बने

भूपेश कैबिनेट की बैठक 20 को

बजट के इन प्रस्तावों पर चर्चा

रायपुर,14 फ रवरी 2023 (ए)। छत्तीसगढ़ विधानसभा के बजट सत्र से पहले भूपेश बघेल कैबिनेट की बैठक 20 को सीएम आवास में होगी। कैबिनेट की बैठक में मंत्रियों की बैठक में मिले प्रस्ताव को अंतिम रूप दिया जाएगा।

बैठक में मंजूरी के बाद बजट को प्रकाशन के लिए भेजा जाएगा। चुनावी साल होने की वजह से माना जा रहा है कि इस बार प्रस्तावित बजट एक लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का हो सकता है।

कैबिनेट की बैठक में विभिन्न विभागों के कार्मचारियों के नियमितिकरण, मानदेय वृद्धि, भत्ता जैसे मुद्दों को चर्चा के बाद अंतिम रूप दिया जाएगा। बता दें कि छत्तीसगढ़ विधानसभा का बजट सत्र 7 मार्च से शुरू हो रहा है। 7 से 25 मार्च तक चलने वाले इस बजट सत्र में कुल 13 बैठकें होंगी।

शिक्षकों को अब मिलेगा प्रमोशन का लाभ

खारिज की गई स्टे

बिलासपुर ,14 फ रवरी 2023 (ए)। शिक्षक पदोन्नति मामले में हाईकोर्ट से लगा स्टे खारिज हो गया है। अदालत ने प्रमोशन पर लगे स्टे को खारिज करते हुए तय प्रक्रिया के तहत काउंसलिंग के माध्यम से प्रमोशन देने के निर्देश दिए। गौरतलब है कि कोरबा जिले के 1145 सहायक शिक्षको को प्रमोशन देकर प्रधान पाठक प्राथमिक शाला के पद पर पदोन्नति दिया गया था। प्रमोशन के बाद उन्हें जिला शिक्षा अधिकारी ने विभिन्न स्कुलो में पदस्थापना दी थी। ड़ीईओ के द्वारा जारी आदेश में विसंगतिया पाते हुए कोरबा कलेक्टर संजीव झा ने निरस्त कर दिया था। बाद में डीपीआई से काउंसलिंग के माध्यम से पदोन्नति के बाद पदस्थापना दिए जाने के निर्देश मिले थे, पर इससे पहले ही कोरबा के कई शिक्षकों ने कलेक्टर के आदेश के खिलाफ हाईकोर्ट में याचिका लगा दी थी। याचिका में बताया गया कि पदोन्नति व पदस्थापना की प्रक्रिया को निरस्त करने का अधिकार कलेक्टर को नही है। जिसकी सुनवाई हाईकोर्ट में जस्टिस पार्थ प्रीतम साहू की सिंगल बेंच में हुई। जिसमें सुनवाई के बाद अदालत ने पदोन्नति प्रक्रिया पर स्टे दे दिया था। मामले की सुनवाई पूरी होने पर अदालत ने फैसला सुरक्षित रख लिया था। जिसमें अब फैसला सुनाते हुए पदोन्नति पर लगे स्टे को खारिज कर दिया गया। अदालत के फैसले के अनुसार कलेक्टर का निर्णय सही था। काउंसलिंग के माध्यम से पदस्थापना दी जानी चाहिए। अदालत के फैसले के बाद अब एक बार फिर से कोरबा जिले में सहायक शिक्षक से प्रधान पाठक पद पर प्रमोशन व पोस्टिंग की प्रक्रिया शुरू हो सकेगी।

बलदेव भाई शर्मा के सर गहराए संकट के बादल

» हाईकोर्ट ने थमाया अवमानना का नोटिस

» क्यों न की जाए कड़ी कार्यवाही

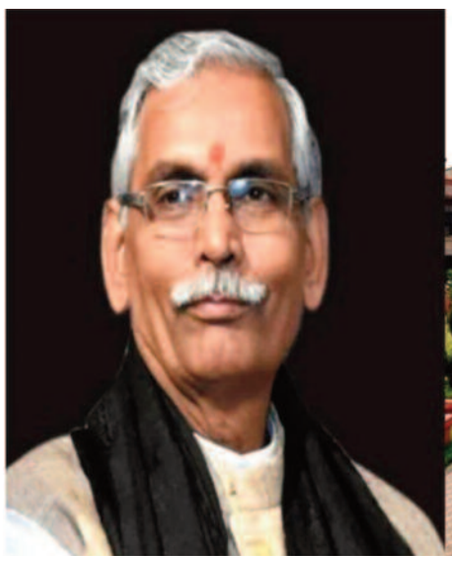

रायपुर,14 फरवरी 2023 (ए)। प्रदेश के पहले और मीडिया गुरुकुल कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय अक्सर विवादों में घिरा रहता है। हाल ही में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने पदोन्नति के मामले में जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ शाहिद अली की अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए कुलपति बलदेव भाई शर्मा को नोटिस जारी कर पूछा है कि क्यों ना उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए। इतना ही नहीं बल्कि इस मामले में कोर्ट ने 21 मार्च को उपस्थित होने का निर्देश भी दिया है। जानकारी के मुताबिक विश्वविद्यालय में वरिष्ठ प्राध्यापक डा अली ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के कैरियर एडवांसमेंट स्कीम (उअर) के अंतर्गत पदोन्नति के लिए विश्वविद्यालय में आवेदन किया था किंतु विश्वविद्यालय में पदोन्नति प्रक्रिया नहीं होने पर छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय में याचिका दायर की। याचिका पर छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने संज्ञान लेकर 29 जून 2022 को विश्वविद्यालय एवं सचिव उच्च शिक्षा विभाग छत्तीसगढ़ शासन को डॉ शाहिद अली के पदोन्नति से संबंधित अभ्यावेदन 90 दिनों के अंदर निराकृत करने का आदेश पारित किया।

लेकिन विश्वविद्यालय के कुलपति शायद उच्च न्यायालय को कुछ समझते ही नहीं है विश्वविद्यालय के प्रशासन ने कोर्ट के आदेश का पालन नहीं किया। छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के आदेश का पालन नहीं होने की स्थिति में याचिकाकर्ता डा शाहिद अली ने न्यायालय की अवमानना का मामला कोर्ट में पेश किया। इस पर 8 फरवरी को सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने कुलपति बल्देव भाई शर्मा को अवमानना नोटिस जारी कर पूछा कि क्यों ना उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाए।

पत्रकारिता विश्वविद्यालय में कुलपति बल्देव भाई शर्मा लगातार शासन और न्यायालयों के आदेशों की अवहेलना करने के आरोपों से घिरे हैं। और इसका प्रमाण भी है विश्वविद्यालय के 23 अनियमित कर्मचारियों को हटाए जाने के मामले में भी कुलपति ने छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के आदेशों की अवमानना की है।विश्वविद्यालय के 17 वर्षों के इतिहास में पहली दफा है जब कर्मचारियों छात्रों से लेकर प्राध्यापक तक कुलपति की कारगुजारियों से त्रस्त हैं।

कुलाधिपति एवं राज्यपाल सुश्री अनुसूईया उइके और छत्तीसगढ़ शासन का छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय की लगातार हो रही अवमानना के मामलों का संज्ञान नहीं लिया जाना एक बड़ा सवाल खड़ा करता है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना

भ्रष्ट अफसरों के खिलाफ इन नंबर पर करें शिकायत

रायपुर,14 फ रवरी 2023 (ए)। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में निर्माणाधीन कार्यों में तृतीय स्तर के गुणवत्ता परीक्षण के लिए राष्ट्रीय गुणवत्ता समीक्षक छत्तीसगढ़ आ रहे हैं। वे प्रदेश के चार जिलों का दौरा कर प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अंतर्गत निर्माणाधीन सड़कों का परीक्षण करेंगे। राष्ट्रीय गुणवत्ता समीक्षक से उनके मोबाइल नंबर पर संपर्क कर प्रगतिरत सड़कों की गुणवत्ता के संबंध में शिकायत व सुझाव साझा की जा सकती है।राष्ट्रीय गुणवत्ता समीक्षक अजीत सोनबा उपाले (मोबाइल नम्बर +91-9822016093) जशपुर और बलरामपुर जिले में सड़कों की गुणवत्ता का परीक्षण करेंगे। इसी तरह कुलभूषण गोयल (मोबाइल नम्बर +91-7030655222) दंतेवाड़ा में और नारायणपुर में सड़कों की गुणवत्ता जांचेंगे।

मॉडल यूट्यूब एंकर की इस हालत में मिली लाश

स्कूटी-मोबाइल भी गायब

जांजगीर-चांपा ,14 फ रवरी 2023 (ए)। मॉडल यूट्यूब एंकर की लाश मिली है। इशिका की लाश उसके बेडरूम से संदिग्ध हालत में मिली थी। सूचना मिलते ही पुलिस, डॉग स्क्वॉड और बिलासपुर से फिंगर प्रिंट एक्सपर्ट की टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल से सबूत इकट्ठा कर जांच के लिए भेजे। मामला सिटी कोतवाली क्षेत्र का है।

पुलिस ने बताया कि इशिका शर्मा यूट्यूब चैनल की एंकर होने के साथ-साथ मॉडलिंग भी करती थी, साथ ही लॉ स्टूडेंट भी थी। वो जांजगीर-चांपा के टीसीएल कॉलेज से लॉ की पढ़ाई कर रही थी। एसपी विजय अग्रवाल ने कहा कि हर एंगल पर जांच की जा रही है। पुलिस ने शुरूआती जांच में हत्या की आशंका जताई है, हालांकि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही आगे की कार्रवाई की करने की बात एसपी ने कही है।

जानकारी के मुताबिक, युवती इशिका शर्मा (22 वर्ष) सिटी कोतवाली क्षेत्र के वार्ड नंबर-18 में अपने माता-पिता और भाई के साथ रहती थी। इशिका स्थानीय यू ट्यूब चैनल में पिछले 3 साल से एंकर थी, साथ ही एलएलबी की फाइनल ईयर की छात्रा थी। रविवार को उसके पत्रकार पिता गोपाल शर्मा और मां किसी काम से कोरबा के लिए गए हुए थे।

घर में सिर्फ इशिका और उसका भाई आर्यन थे। भाई आर्यन शर्मा ने बताया कि उन्होंने अपने एक दोस्त को भी घर पर बुलाया था। सभी ने रात में खाना खाया, लेकिन उसे लगता है कि खाने में कुछ मिला दिया गया था, क्योंकि वो गहरी नींद में चला गया था।

भाई ने बताया कि जब उसकी नींद खुली, तो सोमवार की दोपहर हो चुकी थी। उसके रूम का दरवाजा बाहर से बंद था। इधर पिता गोपाल शर्मा ने बताया कि सोमवार दोपहर को 12 बजे उन्होंने दोनों बच्चों को कॉल लगाया, तो दोनों में किसी ने भी फोन नहीं उठाया। बहुत बार ट्राय करने के बाद भी जब दोनों बच्चों ने फोन नहीं उठाया, तो उन्हें चिंता हुई। उन्होंने चौकीदार को कॉल किया और घर पर जाकर देखने की बात कही।

चौकीदार जब घर पहुंचा, तो उसने पाया कि घर का मेन दरवाजा खुला हुआ है। वहीं आर्यन के बेडरूम का दरवाजा बाहर से बंद है। चौकीदार ने कमरे का दरवाजा खोलकर आर्यन को जगाया। इसके बाद दोनों इशिका के कमरे में पहुंचे, तो देखा कि उसकी लाश बिस्तर पर पड़ी है। वहीं जो दोस्त घर आया था, उसका कोई अता-पता नहीं था। साथ ही उनकी स्कूटी और भाई-बहन दोनों का मोबाइल भी गायब था। चौकीदार के फोन से बेटे ने तुरंत घटना की सूचना पिता को दी।

पिता ने सिटी कोतवाली पुलिस को घटना की जानकारी दी और वे तुरंत अपनी पत्नी के साथ कोरबा से जांजगीर-चांपा आने के लिए निकल गए। इधर डॉग स्क्वॉड के साथ पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और सैंपल इकट्ठा कर जांच के लिए भेजे। माता-पिता के आने के बाद शाम में शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया गया। भाई आर्यन और माता-पिता का बयान दर्ज किया जा रहा है। आसपास के लोगों से भी पूछताछ की जा रही है।

मानदेय में होगी वृद्धि

कर्मचारियों और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए आई अच्छी खबर

रायपुर,14 फरवरी 2023 (ए)। प्रदेश सरकार जल्द ही कर्मचारियों और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को जल्द ही बड़ी खुशखबरी देने जा रही है। बता दें जल्द ही उनके मानदेय में वृद्धि की जाएगी। इसके लिए प्रस्ताव तैयार किया गया है। वहीं प्रस्ताव को वित्त विभाग को भेजा गया है। वहीं यदि प्रस्ताव को मान्य किए जाते हैं तो कर्मचारियों के वेतन बढ़कर ₹11,100 तक पहुंच जाएंगा। बता दें कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की हड़ताल का काफई असर देखने को मिल रहा है जिसे देखते हुए राज्य सरकार जल्द ही मानदेय में वृद्धि की घोषणा कर सकता है।

इसी बीच वेतन विसंगति को दूर करने के लिए महिला एवं बाल विकास विभाग संयुक्त संचालक द्वारा प्रस्ताव तैयार किया गया है। जारी प्रस्ताव में कार्यकर्ताओं के मानदेय को 4,630 रूपए तक बढ़ाने का प्रस्ताव रखा गया है जबकि सहायिकाओं के मानदेय वे ₹6,450 रूपये तक की वृद्धि की बात कही गई है। महिला एवं बाल विकास विभाग के संयुक्त संचालक द्वारा वेतन वृद्धि की मांग राज्य शासन से की गई है। यदि उनके प्रस्ताव को मानय किया जाता है तो कार्यकर्ताओं के मानदेय बढ़कर ₹11,130 जबकि सहायिकाओं के मानदेय बढ़कर 9700 रुपए प्रतिमाह हो जाएगा।

हड़ताल की वजह से पोषण का आहार वितरण नहीं हो रहा है। जिसकी वजह से कुपोषित बच्चे की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। दिसंबर 2022 तक मध्यम कुपोषित बच्चों की संख्या 16342 थी, जो बढ़कर 20658 पहुंच गई है। गंभीर कुपोषित बच्चों की संख्या 3678 से बढ़कर 4256 हो गई है। इससे पहले आंगनबाड़ी केंद्रों में वितरण के लिए रेडी टू ईट पैकेट का खेप परियोजनाओं में लाकर रखा गया है। इसका लाभ शिशुवती माता, गर्भवती और 2 वर्ष से कम आयु के बच्चे को प्रदान किया जाता है। संवेदनशील मामले होने पर वितरण के लिए जिला प्रशासन की ओर से वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की गई है। वही पोषण आहार की उपयोगिता 3 माह के भीतर करना अनिवार्य होता है अन्यथा समय सीमा के बाद पोषण आहार हितग्राहियों तक नहीं पहुंच रहें। इसके खराब होने के भी आसार हैं।

अब छात्रों की समस्या का होगा समाधान

इस टोल फ्री नंबर पर करे कॉल

रायपुर,14 फ रवरी 2023 (ए)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा हाई स्कूल, हायर सेकेण्डरी और हायर सेकेण्डरी व्यावसायिक परीक्षाओं के संदर्भ में छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा 21 फरवरी से हेल्पलाईन-2023 प्रारंभ की जा रही है। विद्यार्थी, शिक्षक और अभिभावक रविवार एवं अवकाश दिवस को छोड़कर प्रातः 10.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक हेल्पलाइन में मंडल के टोल फ्री नं. 18002334363 पर अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

माध्यमिक शिक्षा मंडल के सचिव प्रो. व्ही.के. गोयल ने बताया कि हेल्पलाइन में मनो चिकित्सक, शैक्षिक अभिप्रेरक, विषय-विशेषज्ञ एवं मंडल के अधिकारी उपस्थित रहेंगे। मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक, शैक्षिक अभिप्रेरक परीक्षार्थियों के परीक्षा भय, परीक्षा तनाव संबंधी समस्याओं का निराकरण कर परामर्श देंगे। विषय-विशेषज्ञ आगामी दिवस को होने वाली विषय की परीक्षा से संबंधित समस्याओं का निराकरण करेंगे और मंडल के अधिकारी मंडल से संबंधित समस्याओं का समाधान करेंगे।

एक बार फिर नक्सलियों ने खेला खूनी खेल

बस्तर ,14 फ रवरी 2023 (ए)। जिले में सिलसिलेवार माओवादियों द्वारा जनप्रतिनिधियों की हत्या के चलते माओवादियों की दहशत फिर कायम हो गई है। लंबे समय से शांत चल रहे माओवादियों ने सिलसिलेवार पंचायत प्रतिनिधियों को निशाना बनाया है और इनमें तीन भारतीय जनता पार्टी के नेता है। इन हत्याओं के पीछे पुलिस का दावा है, कि बौखलाए नक्सली अपना दबदबा कायम करने इस तरह की कोशिश कर रहे हैं। भाजपा नेताओं की हत्या का मामला लोकसभा में उठने के बाद बस्तर में नक्सलवाद पर अंकुश लगाने की कोशिशों पर भी सवालिया निशान उठने लगे है।

पंचायत प्रतिनिधियों को बना रहे निशाना

बस्तर में फिर एक बार नक्सलियों का खूनी खेल शुरू हो गया है। इस बार सुरक्षा बल के जवान निशाने पर नहीं है। इसकी जगह माओवादियों ने सॉफ्ट टारगेट के तौर पर पंचायत प्रतिनिधियों को निशाना बनाना शुरू किया है। यह पंचायत प्रतिनिधि ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, जहां सुरक्षा 24 घंटे में मौजूद नहीं रहती। इसी का फायदा उठाकर सिलसिलेवार हत्याएं हो रही हैं। हत्याओं के पैटर्न में भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की हत्या ज्यादा हुई है। लिहाजा मामले में सियासत गर्म है और भारतीय जनता पार्टी से टारगेट किलिंग का नाम दे रही है, लेकिन बड़ा सवाल यह है कि माओवादी इन हत्याओं से क्या हासिल करना चाहते हैं। मारे गए नेताओं के पास छोड़े गए परचो में पुलिस मुखबिरी, माओवादियों के खिलाफ सक्रियता को वजह बताया गया है, लेकिन अक्सर हत्याओं के पीछे सिर्फ इतनी ही वजह नही होती है।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No. CHHHIN/2004/15050,मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)